04 - किताबों से फूटती हिंसा

05 - बेहतर होता इस पर आयुष मंत्रालय भी अपनी राय रखता

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 12 दिसंबर, 2024

06 - गैस एजेंसियां उपभोक्ताओं को जागरूक करने नहीं...

07 - पीएम श्री एयर एम्बुलेंस से महिला को समय पर हायर सेंटर रेफर कर बचाई जान

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 74, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

प्रसंगवश

कॉप-29 : चीन के रुख से जलवायु-विमर्श पर उमड़े नए प्रश्न

डॉ. कुशाग्र राजेंद्र

बीते दिनों जलवायु संकट को लेकर दुनिया की चिंता अपने चरम पर थी, मौका था कॉप-29 में जलवायु परिवर्तन के आर्थिक पहलुओं पर विश्व के नेताओं और नीति-निर्माताओं के बीच जोरदार बहस। लेकिन अजरबैजान की राजधानी बाकू में हुई कॉप-29 की बैठक कुछ ख़ास हासिल नहीं कर पाई। इस बार बैठक जलवायु संकट के प्रति डोनाल्ड ट्रंप के निर्वाचन से उपजी निराशा के साये में शुरू हुई। इसी कड़ी में बैठक की समाप्ति आते आते चीन के आधिकारिक रुख ने जलवायु विमर्श को एक नए किस्म के गतिरोध पर ला खड़ा किया जो अगले कई सालों तक इस संदर्भ में चल रहे वैश्विक प्रयासों को प्रभावित करता रहेगा।

जलवायु बैठक के प्रति नए स्तर की उदासीनता तब देखी जा रही है जब हर हफ्ते दुनिया के किसी न किसी कोने में बाढ़, जंगल की आग, अत्यधिक गर्मी, चक्रवात, या मौसम की चरम स्थितियां देखने को मिल रही हैं।

कॉप-29 बैठक में इस बार मुख्य मुद्दा यह था कि जलवायु कोष के नए लक्ष्य के अनुरूप 'ऐतिहासिक जिम्मेदारी के सिद्धांत' के आधार पर किसे और कितनी राशि का योगदान करना चाहिए। चूंकि इसमें सभी देशों खासकर विकसित देशों की वित्तीय जिम्मेदारियां निर्धारित की जानी थी, इस कारण इसे 'फाइनेंस कॉप' भी कहा गया। जलवायु वित्त से आशय उस आर्थिक मदद से है जो गरीब और विकासशील देशों को जलवायु संकट से बचाने के लिए पेरिस जलवायु समझौते के तहत अमीर देश जुटा रहे हैं।

इसी बीच कार्बन ब्रीफ की एक रिपोर्ट आई जिसके मुताबिक चीन न सिर्फ सालाना सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक है बल्कि ऐतिहासिक उत्सर्जन में भी चीन यूरोप के 27 देशों से सामूहिक उत्सर्जन को पीछे छोड़ विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक देश बन गया है। इसके मद्देनजर विकसित देश जलवायु संकट से लड़ने के लिये बनाये गये कोष में चीन सहित कुछ मध्य-पूर्व के समृद्ध तेल उत्पादक देशों की भागीदारी तय करना चाह रहे थे, जबकि विकासशील देशों का समूह जी-77 'जलवायु कोष' के लिये 1.3 ट्रिलियन डॉलर सालाना का लक्ष्य लेकर चल रहा था।

जहां अमीर देशों का कार्बन उत्सर्जन संतुलन की ओर बढ़ रहा है, वहीं पिछले चार-पांच दशकों में चीन का कार्बन उत्सर्जन बेतहाशा बढ़ा है। 1992 तक चीन का ऐतिहासिक उत्सर्जन यूरोपीय संघ के उत्सर्जन का मात्र 41 प्रतिशत था। इसी बीच अगले कुछ दशकों में ही चीन ने अपने 1,000 से अधिक कोयला-आधारित बिजली संयंत्रों की मदद से अपनी अर्थव्यवस्था को 40 गुना से अधिक विस्तार दे दिया। इसके परिणामस्वरूप, आज चीन यूरोपियन संघ और अमेरिका को पीछे छोड़ दुनिया में ग्रीनहाउस गैसों का सबसे बड़ा वार्षिक उत्सर्जक बन चुका है।

मानव इतिहास में जलवायु संकट अब तक के सबसे निर्णायक दौर से गुजर रहा है। क्या किया जाना है, यह 2015 के पेरिस जलवायु समझौते में पहले ही तय हो चुका है। पर विवाद इस बात पर है कि प्रयास कौन करेगा और किस हद तक करेगा?

इस खींचतान में एक ओर जलवायु परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक रूप से जिम्मेदार अमेरिका और यूरोप के अमीर देश हैं, तो दूसरी ओर भारत, चीन, और अन्य विकासशील एवं गरीब देश हैं, जो जलवायु संकट का सबसे अधिक सामना कर रहे हैं। साल 2017 तक वायुमंडल में जमा मानव जनित कार्बन के सबसे बड़े उत्सर्जक देश थे-संयुक्त राज्य अमेरिका (25%), यूरोप (22%), चीन (12.6%), रूस (6%), जापान (4%) और भारत (3%)। महाद्वीप के स्तर पर उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया का क्रमशः योगदान 29%, 33% और 29% था, जबकि दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका का योगदान मात्र 3% ही था।

भारत और चीन ऐतिहासिक रूप से दुनिया के शीर्ष दस कार्बन उत्सर्जकों में शामिल जरूर हैं, पर प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन अभी भी तुलनात्मक रूप से कम है। चूंकि वैश्विक तापमान वृद्धि के लिए सबसे बड़ी ऐतिहासिक जिम्मेदारी अमेरिका और यूरोप जैसे समृद्ध देशों की है, ऐसे में इसे रोकने में अग्रणी भूमिका भी उन्हीं की बनती है। चीन का लगातार बढ़ता कार्बन उत्सर्जन अनेक विरोधाभास झेल रहे जलवायु विमर्श में एक नया पेंच बनकर उभरा है। चीन ने पेरिस जलवायु समझौते के तहत 2060 तक नेट-जीरो का लक्ष्य तय किया है, लेकिन उसका वार्षिक कार्बन उत्सर्जन साल दर साल बढ़ ही रहा है। चीन का दावा है कि यह दशक उसके उत्सर्जन के उच्चतम पर पहुंचने का समय होगा, जिसके बाद उसमें गिरावट आएगी। ये जरूर है कि पिछले कुछ सालों में चीन ने पवन टर्बाइन, सौर पैनल, और इलेक्ट्रिक वाहनों की क्षमता में अत्यधिक विकास किया है, पर ऐसी भी आशंका है कि उसका ऐतिहासिक उत्सर्जन जल्द ही अमेरिका के करीब भी पहुंच सकता है। अब अमीर देशों को जलवायु संकट की जिम्मेदारी के तहत जलवायु कोष के लिए योगदानकर्ता देशों की सूची में चीन सहित अन्य देशों को भी शामिल करने का बहाना मिल गया है।

कॉप-29 में इस बात पर भी जोर रहा कि दस सबसे बड़े उत्सर्जक में शामिल होने और एक खास स्तर से अधिक प्रति व्यक्ति आय होने के कारण चीन को जलवायु वित्त का भार उठाना ही पड़ेगा। हालांकि, चीन इस सुझाव का विरोध करता है और कई देशों के साथ अपने द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को जलवायु कोष में अपना योगदान बताता है। चीन के अपने 'जलवायु कोष' की अवधारणा के अनुसार, वह साल 2016 से अब तक विकासशील देशों पर लगभग 24.5 बिलियन डॉलर खर्च कर चुका है। जाहिर है चीन वही रास्ता अपना रहा है जो अब तक विकसित देश चुनते आए हैं। चीन का मानना है कि जलवायु संकट की जिम्मेदारी तय करने के लिए कुल उत्सर्जन के साथ-साथ प्रति व्यक्ति उत्सर्जन को भी मानदंड बनाना चाहिए। चीन का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन अमेरिका, यूरोपीय संघ, जापान और कनाडा जैसे देशों से कम है। इस तर्क में, भारत और चीन समान स्थिति पर प्रतीत जरूर होते हैं, पर भारत का ऐतिहासिक उत्सर्जन अभी भी चीन का एक-चौथाई और वैश्विक औसत के आसपास ही है। भारत की प्राथमिकता अभी भी अपनी बड़ी आबादी के लिए बुनियादी सुविधाएं जुटाने पर है, जबकि चीन दशकों से वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में आर्थिक विकास का लाभ लेता रहा है।

जलवायु कोष पर अमीर देशों की उदासीनता और चीन और मध्य पूर्व के समृद्ध देशों के अड़ियल रुख के कारण, सालाना 1.3 ट्रिलियन डॉलर की बजाय केवल 300 बिलियन डॉलर सालाना जुटाने पर सहमति बनी, जिसे भारत सहित कई विकासशील देशों ने 'ऊंट के मुंह में जीरा' और 'बहुत देर से, बहुत थोड़ा' करार दिया। कुल मिलाकर, कॉप-29 से जलवायु संकट के समाधान को लेकर स्पष्ट निर्णय की उम्मीद लगाए देशों को निराशा हाथ लगी।

- द वायर हिंदी

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

वे सब
अहिंसक थे
संयोग से मेरे आदर्श भी।
जब-जब
साथ बैठते
तो हिंसा पर बहस करते।
फिर
एक निष्कर्ष तक
पहुँचते ।
उनका निष्कर्ष
कोड़े की तरह
मेरी पीठ पर छप चुका है।

- नेहा नरुका

गीता जयंती पर जनकल्याण पर्व और जनकल्याण अभियान आरंभ होना सुखद संयोग : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

बना सस्वर गीता पाठ का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि यह सुखद संयोग है कि गीता जयंती के अवसर पर प्रदेश में जनकल्याण पर्व और मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का शुभारंभ हो रहा है। ग्यारह से 26 दिसंबर तक चलने वाले जनकल्याण पर्व में कई विकास कार्यों के भूमि-पूजन और लोकार्पण होंगे। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में आज से 26 जनवरी 2025 तक गरीब, युवा, किसान और महिलाओं को समृद्धि के नए अवसर उपलब्ध कराते हुए 34 हितग्राही मूलक योजनाओं, 11 लक्ष्य आधारित योजनाओं और 63 सेवाओं का लाभ उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने के उद्देश्य से घर-घर सर्वे किया जाएगा। अभियान से प्रत्येक पात्र व्यक्ति को जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाएगा। जनकल्याण पर्व के शुभारंभ पर प्रदेश की एक करोड़ 28 लाख लाड़ली बहनों के खातों में 1 हजार 572 करोड़ रूपए की राशि तथा गैस सिलेंडर रिफीलिंग की लगभग 350 करोड़ रूपए की राशि बहनों के खातों में अंतरित की गई। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में भी 55 लाख हितग्राहियों के खातों में 334.38 करोड़ की राशि भी सिंगल क्लिक से खातों में अंतरित की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनकल्याण पर्व और अभियान की शुभकामनाओं के साथ राशि अंतरण की बहनों को बधाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गीता जयंती के अवसर पर सस्वर गीता पाठ का विश्व रिकार्ड बनाने वाले आचार्यों तथा बटुकों का भी अभिवादन किया।

- मुख्यमंत्री ने 1 करोड़ 28 लाख लाड़ली बहनों के खातों में 1 हजार 572 करोड़ रूपए किये अंतरित
- 55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 334 करोड़ रूपए की राशि की अंतरित
- मुख्यमंत्री ने जनकल्याण पर्व और मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का किया शुभारंभ
- राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में लाल परेड ग्राउंड से हुआ राज्य स्तरीय कार्यक्रम

मुख्यमंत्री ने संतों का पुष्प वर्षा कर किया अभिवादन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य सरकार के एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर प्रदेशव्यापी जनकल्याण पर्व और मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का दीप प्रज्ज्वलित कर लाल परेड ग्राउंड से शुभारंभ किया। उन्होंने उपस्थित संतों का पुष्प वर्षा कर अभिवादन किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल, उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, सूक्ष्म लघु और मध्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप, संस्कृति और पर्यटन मंत्री श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग, श्री हितानंद शर्मा, श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री भगवान दास सबनानी, महापौर श्रीमती मालती राय, विधायक नगर निगम सभापति श्री किशन सूर्यवंशी, श्री सुमित पचौरी, अन्य जन-प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सीएम बोले-किसी पूजा पद्धति से हमारा विरोध नहीं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा, किसी पूजा पद्धति से हमारा विरोध नहीं है। हमने इंद्र का दरबार नहीं देखा लेकिन आज उसका लघु रूप यहां दिखाई दे रहा है। 10 हजार श्लोक यहां पढ़े गए। 5 हजार साल पहले जो रिकॉर्ड बना था, उस समय गिनीज बुक नहीं थी। लेकिन उस समय भगवान के मुखारबिंद से निकले एक-एक शब्द लिपिबद्ध हुए थे।

संविधान के अपमान पर महाराष्ट्र के परभणी में भारी बवाल

- कई इलाकों में कोहराम, आगजनी और आंसू गैस के छोड़े गए गोले

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के परभणी में संविधान के अपमान को लेकर कल से चल रहे विरोध प्रदर्शन के बीच हिंसा भड़क गई। बुधवार दोपहर प्रदर्शनकारियों ने कई इलाकों में आगजनी की। हालात काबू करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े। प्रदर्शनकारी संविधान का अपमान करने वालों को फांसी देने की मांग कर रहे हैं। परभणी की घटना पर बाबा साहेब के पोते प्रकाश आंबेडकर की प्रतिक्रिया भी सामने आई है। जानकारी के अनुसार मंगलवार को किसी उपद्रवी ने परभणी रेलवे स्टेशन के बाहर बी आर अंबेडकर की प्रतिमा के पास रखी संविधान की प्रतिकृति को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिसके बाद आगजनी और पथराव हुए। इसके विरोध में कई संगठनों ने शहर में बंद की अपील की थी। बंद के दौरान अचानक लोग भड़क गए। उपद्रवियों ने कई जगहों पर आगजनी शुरू कर दी। पुलिस ने हालात काबू करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े।

सोरोस और अडानी से घिरा सदन धनखड़ पर गतिरोध जारी

स्पीकर से मुलाकात के बाद राहुल गांधी ने दिखाए 'पुष्पा' वाले तेवर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को स्पीकर ओम बिरला से मिले। मुलाकात के बाद उन्होंने कहा कि विपक्ष सदन चलाना चाहता है और 13 दिसंबर को संविधान पर बहस करना चाहता है, जैसा कि सहमति बनी थी। साथ ही, उन्होंने बीजेपी पर उद्योगपति गौतम अडानी के खिलाफ लगे आरोपों पर चर्चा से भागने का आरोप लगाया। राहुल गंधी ने कहा कि बीजेपी अडानी पर चर्चा से चाहे जितना भागे, विपक्ष इस मुद्दे को छोड़ने वाला नहीं है। इस बीच, राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव को लेकर बीजेपी और विपक्ष के बीच गतिरोध के चलते राज्यसभा की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। राहुल गांधी ने स्पीकर के साथ अपनी मुलाकात का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने बिरला से उनके खिलाफ की गई अपमानजनक टिप्पणियों को हटाने का अनुरोध किया है। स्पीकर ने इस मामले को देखने का आश्वासन दिया है। राहुल गांधी ने जोर देकर कहा कि चाहे उनके बारे में कुछ भी कहा जाए, विपक्ष 13 दिसंबर को संविधान पर बहस चाहता है। उन्होंने बीजेपी पर अडानी मामले पर चर्चा से भागने का आरोप लगाते हुए कहा कि विपक्ष इस मुद्दे को नहीं छोड़ेगा। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, मैंने स्पीकर के साथ एक बैठक की। मैंने उनसे कहा कि मेरे खिलाफ की गई अपमानजनक टिप्पणियों को हटा दिया जाना चाहिए। स्पीकर ने कहा कि वह इस पर गौर करेंगे... हमारा उद्देश्य है कि सदन चले और सदन में चर्चा हो।

चाहे वे मेरे बारे में कुछ भी कहें, हम चाहते हैं कि 13 दिसंबर को बहस हो। उन्होंने आगे कहा, वे अडानी पर चर्चा नहीं चाहते। अंत में, हम इसे नहीं छोड़ेंगे। वे हम पर आरोप लगाते रहेंगे लेकिन सदन को काम करना चाहिए। इससे पहले, कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने लोकसभा में मणिपुर की बिगड़ती स्थिति का मुद्दा उठाया। उन्होंने पूछा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर कब जाएंगे और गृह मंत्री अमित शाह सदन को स्थिति से निपटने के लिए उठाए जा रहे कदमों से कब अवगत कराएंगे। गोगोई ने बीजेपी पर जॉर्ज सोरोस का मुद्दा उठाकर सरकार की नाकामियों को छिपाने का आरोप भी लगाया।

एआई इंजीनियर की खुदकुशी

- पत्नी-सास समेत 4 पर एफआईआर

नई दिल्ली (एजेंसी)। बेंगलुरु में एआई इंजीनियर अतुल सुभाष की खुदकुशी मामले में चार लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई है। एफआईआर में अतुल की पत्नी निकिता सिंघानिया, सास निशा सिंघानिया, साले अनुराग सिंघानिया और चाचा ससुर सुशील सिंघानिया का नाम है। अतुल के भाई बिकास कुमार ने बेंगलुरु के मराठाहल्ली पुलिस स्टेशन में शिकायत की थी। इसी के आधार पर पुलिस ने पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 108 (आत्महत्या के लिए उकसाना), धारा 3(5) (जब दो या ज्यादा लोग शामिल हों तो सामूहिक जिम्मेदारी बनती है) का केस दर्ज किया है। अतुल ने 1 घंटे 20 मिनट का वीडियो जारी किया था। इसमें उन्होंने अपनी आपबीती बताई। अतुल ने ये भी मांग की थी कि अगर उन्हें प्रताड़ित करने वाले बरी हो जाएं तो अस्थियां कोर्ट के बाहर गटर में बहा दी जाएं। कमरे में तख्ती मिली थी, लिखा था- अभी न्याय बाकी है अतुल ने उत्तर प्रदेश के जौनपुर की एक जज पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने अपने लेटर में लिखा है कि जज ने मामले को रफा-दफा करने के नाम पर 5 लाख रुपए मांगे थे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 12 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हरियाणा-पंजाब में खालिस्तानी नेटवर्क खंगाल रही एनआईए

● 5 शहरों में 10 ठिकानों पर छापेमारी,नाभा जेल में बंद गैंगस्टर के घर पहुंची टीम

सिरसा (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने हरियाणा और पंजाब में खालिस्तानी आतंकियों के नेटवर्क का पता लगाने के लिए छापेमारी की है। यह छापेमारी आज सुबह 5 बजे से करीब 10 बजे तक चली। पंजाब के मुक्तसर, बठिंडा और मोगा फिरोजपुर सेंट्रल जेल में यह छापेमारी की गई। जेल में बंद एक गैंगस्टर से पूछताछ की भी खबर है। साथ ही हरियाणा में पंजाब की सीमा से सटे डबवाली के इलाकों में भी छापेमारी की गई। एजेंसी के अधिकारियों की सुरक्षा के लिए पंजाब पुलिस की टीमें भी भेजी गई थीं। मिली जानकारी के अनुसार गैंगस्टरों और आतंकियों के कनेक्शन को लेकर यह छापेमारी की गई है। मानसा में एनआईए को विशाल सिंह (पटियाला जेल में बंद) और मेहशी बॉक्सर (पूर्व खिलाड़ी) के आतंकी अर्श डल्ला और ड्रग तस्करों से संबंध होने का शक है। बठिंडा में एनआईए ने संदीप सिंह ढिल्लो निवासी गांव कोठा गुरु, बॉबी निवासी मोड़ मंडी और एक अन्य के घर पर छापेमारी की।

युगों- युगों में जन्मते हैं आध्यात्मिक जगत के प्रकाश पुंज 'सियाराम बाबा' सरीखे संत

राम में रमे - राम से रचे और राम तो मानों उनकी रोम- रोम में बसे थे

भावपूर्ण स्मरण – वरिष्ठ पत्रकार ,राजेश शर्मा

ऋषि,मुनियों, साधु, संतों, तपस्वियों की पावन धरा भारत भूमि धन्य है जहां 'सियाराम बाबा' सरीखे संत शिरोमणि जन्मते है। उनकी सांसों का हर सुमिरन 'राम' था .. राम में रमे - राम से रचे ... ऐसा प्रतीत होता था मानों उनकी रोम- रोम में बसे थे तो सिर्फ राम .... लाखों- करोड़ों भक्तों की आस्था के केंद्र ...क्या निमाड़ अंचल, क्या भारत वर्ष अपितु सात समंदर पार दुनिया भर में बाबा के चाहने वाले गुरू भक्तों का कारवां। तभी तो माँ नर्मदा के पावन किनारे पर बसा सियाराम बाबा का आश्रम तेली भट्याण आध्यात्मिक शक्ति का एक बड़ा केंद्र है।

हर गुरु भक्त यहां शीश नवा कर अपने को धन्य मानता है। माँ नर्मदा का सपूत निमाड़ की धरा को आध्यात्मिक पहचान दिलाने वाले, सादगी से भरे हुए, भक्तों पर वात्सल्य की वर्षा करने वाले, समरस हिन्दू समाज के प्रतीक, संत शिरोमणि 1008 सियाराम बाबा के देह परिवर्तन से आज भक्तों का अंतर्मन व्यथित है।

मोक्ष का सन्मार्ग दिखाने वाले महासंत आज 'मोक्ष एकादशी' को ब्रम्हमुहूर्त में परमज्योति में विलीन हो गए ।

आज ही के दिन मोक्षदा एकादशी को नर्मदा किनारे भट्टियाण खरगोन को कर्मस्थली बनाया था

खरगोन जिले में जन्मे पूज्य संत सियाराम बाबा का बचपन से ही अध्यात्म की ओर रुझान था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई, लेकिन कक्षा 7-8 के बाद उन्होंने शिक्षा छोड़ दी और अध्यात्म की राह पकड़ी। एक संत के संपर्क में आने के बाद हिमालय की यात्रा पर निकल गए। हिमालय में कुछ वर्षों की तपस्या के बाद वे 1955 में वापस लौटे और आज ही के दिन मोक्षदा एकादशी को नर्मदा किनारे भट्टियाण गांव जिला खरगोन को अपनी कर्मस्थली बनाया। यहां उन्होंने रामायण का पाठ और हनुमान भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया।

10 रुपये दानी बाबा

सियाराम बाबा की प्रसिद्धि उनके सेवा कार्यों और दान के लिए भी है। नर्मदा किनारे के घाटों के विकास के लिए उन्होंने दो करोड़ रुपये की राशि दान की। इतना ही नहीं, बाबा के आश्रम में केवल 10 रुपये का दान लिया जाता है, और इससे अधिक की राशि लौटा दी जाती है। यही कारण है कि उन्हें '10 रुपये दानी बाबा' कहा जाता है।

किसी भी मौसम में केवल एक लंगोट में ही तप और साधना में लीन रहे

संत सियाराम बाबा का जीवन सादगी का प्रतीक रहा। किसी भी मौसम में वे केवल एक लंगोट में ही तप और साधना में लीन रहे। उनका शरीर इस जीवनशैली का अभ्यस्त हो चुका था।

भोजन के लिए वे किसी पर निर्भर नहीं रहे; यहां तक कि अपना भोजन स्वयं पकाया। कई बार वे केवल फलाहार पर ही आश्रित रहे।

आज ही के दिन मोक्षदा एकादशी को तेली भट्याण आए और आज ही के दिन मोक्ष के लिए तय किया

बाबा का व्यक्तित्व और उनकी तपस्या लोगों को प्रेरणा देती है। उनके अनुयायियों के लिए वे न केवल एक आध्यात्मिक गुरु, बल्कि जीवन के हर पहलू में सादगी और सेवा का उदाहरण भी हैं।

*1955 में आज ही के दिन मोक्षदा एकादशी को तेली भट्याण आए और आज ही का दिन मोक्ष के लिए तय किया।

*पूज्य बाबाजी स्थूल शरीर त्याग कर सूक्ष्म रूप में सदैव विद्यमान रहेंगे और मानव जीवन के कल्याण के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

*युगों- युगों में जन्मते है आध्यात्मिक जगत के प्रकाश पुंज।

* सियाराम बाबा 'सरीखे संत .... कोटि कोटि नमन' ।

12 वर्षों तक मौन व्रत और 10 वर्षों तक एक पैर पर खड़े रहकर की तपस्या

बाबा ने 12 वर्षों तक मौन व्रत रखा और 10 वर्षों तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या की। इस कठोर साधना के कारण उनकी ख्याति देश-विदेश तक फैल गई। उनकी साधना और तपस्या के चलते उनमें चमत्कारी शक्तियां थी। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन के सही मूल्यों का ज्ञान कराया और आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिया। बाबाजी की प्रेरणा से श्रद्धालुओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया। 100 से अधिक वर्ष की आयु में भी उनकी ऊर्जा, तप और मानव सेवा के प्रति समर्पण अनुकरणीय था। अपनी सादगी और त्यागमयी जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध रहे।

सख्त हुए ठंड के तेवर, शीतलहर ने डराया

● राजस्थान-एमपी और दिल्ली में कोल्ड डे, पारा 10 डिग्री से नीचे ● आईएमडी ने हिमाचल और उत्तराखंड में पाला पड़ने की दी चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय में हो रही बर्फबारी और मैदानों की तरफ चलने वाली हवाओं से पूरा उत्तर भारत शीतलहर की चपेट में है। मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में कोल्ड डे का अलर्ट है। इन राज्यों में पारा 10 डिग्री से नीचे चला गया है। राजस्थान के हिल स्टेशन माउंट आबू में पारा 0 डिग्री पर पहुंच गया है। यहां कार की छतों पर पड़ी ओस की बूंदें जम गईं। सीकर के फतेहपुर में पारा माइनस 1 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। मध्यप्रदेश के हिल स्टेशन पचमढ़ी में भी हर तरफ ओस जमी हुई नजर आ रही है। यहां रात का पारा 1.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। आईएमडी ने हिमाचल और उत्तराखंड में पाला पड़ने का अलर्ट जारी किया है। यानी यहां जमीन, हवा से भी ठंडी हो सकती है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख में तापमान एक हफ्ते से माइनस में है। सोनमर्ग, गुलमर्ग में मंगलवार रात को भी भारी बर्फबारी हुई। बर्फीली हवाओं की वजह से पूरा मध्यप्रदेश ठिठुर गया है। इससे दिन और रात का टेम्प्रेचर 6 डिग्री तक गिर गया है। बुधवार को भोपाल, इंदौर, जबलपुर-उज्जैन समेत प्रदेश के 16 जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया गया है। इनमें भोपाल, इंदौर, उज्जैन और शाजापुर में कोल्ड डे रह सकता है। मंगलवार को पचमढ़ी देश का 10वां सबसे सर्द शहर रहा। मंगलवार को प्रदेश के तीन शहरों को छोड़कर बाकी सभी जगहों पर पारा 10 डिग्री से नीचे पहुंच गया है। जयपुर,कोटा और बीकानेर संभाग के जिलों में कोल्ड वेव का असर रहा।

धनखड़ खुद को आरएसएस का एकलव्य बताते हैं : खड़गे

कांग्रेस चीफ बोले-सरकार की तारीफ करते हैं, विपक्ष को विरोधी समझते हैं,अविश्वास प्रस्ताव की 4 वजह बताईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए जा रहे अविश्वास प्रस्ताव पर इंडिया ब्लॉक ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- सभापति राज्यसभा में स्कूल के हेडमास्टर की तरह व्यवहार करते हैं। विपक्ष का सांसद 5 मिनट भाषण दे तो वे उस पर 10 मिनट तक टिप्पणी करते हैं।

सभापति सदन के अंदर प्रतिपक्ष के नेताओं को अपने विरोधी के तौर पर देखते हैं। सीनियर-जूनियर कोई भी हो, विपक्षी नेताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर अपमानित करते हैं। उनके व्यवहार के कारण हम अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए मजबूर हुए हैं। सदन में एक्सपीरियंस नेता हैं, जर्नलिस्ट हैं, लेखक हैं, प्रोफेसर हैं। कई फील्ड में काम कर सदन में आए हैं। 40-40 साल का अनुभव रहा है, ऐसे नेताओं को भी सभापति प्रवचन सुनाते हैं। आमतौर पर विपक्ष चेयर से प्रोटेक्शन मांगता है, अगर सभापति ही प्रधानमंत्री और सत्तापक्ष का गुणगान कर रहा हो तो विपक्ष की कौन सुनेगा। 3 साल में धनखड़ का आचरण पद की गरिमा के विपरीत रहा है। कभी सरकार की तारीफ के कसीदे पढ़ते हैं, कभी खुद को संघ का एकलव्य बताते हैं।

ईवीएम गड़बड़ी की शिकायत लेकर सुप्रीम कोर्ट जाएगा इंडिया ब्लॉक

महाराष्ट्र चुनाव: चुनाव आयोग जांच के बाद कह चुका ईवीएम-वीवीपैट में कोई मिसमैच नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हेरफेर का आरोप लगाते हुए विपक्षी गठबंधन अब सुप्रीम कोर्ट जाने की तैयारी में है। चुनाव आयोग के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने के फैसले की घोषणा मंगलवार को एनसीपी-शरद पवार के नेता प्रशांत जगताप ने की। जगताप पुणे की हडपसर सीट से विधानसभा चुनाव हार गए थे। विपक्षी गठबंधन 13 दिसंबर को ईवीएम में गड़बड़ी को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाएगा। यह फैसला मंगलवार को विपक्षी नेताओं के बीच इस बैठक के बाद लिया गया। यह मीटिंग एनसीपी (शरद) प्रमुख शरद पवार के घर पर हुई थी। इसमें एएपी संयोजक अरविंद

केजरीवाल और जाने-माने वकील और कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी भी शामिल हुए। इंडिया ब्लॉक ने दावा किया है कि ईवीएम में कथित हेरफेर के कारण वे महाराष्ट्र चुनाव हार गए। पिछले महीने हुए चुनावों में, भाजपा के नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने 288 सीटों में से 235 सीटें जीतीं, जबकि विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन को 46 सीटें मिलीं। चुनाव आयोग ने मंगलवार को बताया कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में ईवीएम वोटों से वीवीपैट पर्चियों के मिलान में कोई गड़बड़ी नहीं मिली है। आयोग ने जानकारी दी कि 23 नवंबर को काउंटिंग के दिन, 4 बूथों के पर्चियों की गिनती की। इस गिनती में कोई गड़बड़ी नहीं पाई गई। इस दौरान 288 विधानसभा क्षेत्रों की 1440 वीवीपैट यूनिटों की पर्चियों का मिलान किया गया था। दरअसल, विपक्षी दलों ने रिजल्ट में गड़बड़ी का आरोप लगाया था।

सॉफ्ट पावर का इस्तेमाल भारत से सीख सकता है इजरायल

हमास से युद्ध के बीच इजरायली राजदूत का आया बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल हमास को नष्ट करने के लिए सैन्य अभियान चला रहा है, इसी बीच इजरायली राजदूत रूवेन अजार ने हाल ही में एक अंग्रेजी अखबार से बातचीत की। इस बातचीत में उन्होंने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार रखे। गाजा में चल रहे युद्ध के दौरान फिलिस्तीनियों को मिल रहे समर्थन के बीच, अजार ने माना कि इजरायल सूचना के युद्ध में पिछड़ रहा है। उन्होंने कहा कि इजरायल सॉफ्ट पावर यानी जनसंपर्क और संचार के क्षेत्र में भारत से सीख सकता है। अजार ने बताया कि इजरायल ने अपनी सैन्य ताकत (हार्ड पावर) पर ज्यादा ध्यान दिया है और सॉफ्ट पावर पर कम। उन्होंने कहा कि हमारा अधिकांश निवेश हार्ड पावर में चला गया है, सॉफ्ट पावर में नहीं। आप जिस तरह से इन समूहों को चुनौती दे रहे हैं, उसमें आप हार्ड और सॉफ्ट पावर को मिला रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत, इजरायल और फिलिस्तीन दोनों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखना चाहता है। भारत ने गाज़ा में युद्ध विराम की बार-बार अपील की है लेकिन साथ ही, भारत ने आतंकवाद से अपनी रक्षा करने के इजरायल के अधिकार का भी समर्थन किया है। अजार ने आगे कहा कि भारत सरकार इजरायल के मुख्य राष्ट्रीय हितों का समर्थन करती रही है। हालांकि, दोनों देशों के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद भी हैं। जैसे, भारत यूएन को सहायता देता रहा है, जबकि इजरायल इसे प्रतिबंधित करता है। फिलिस्तीन से संबंधित यूएन प्रस्तावों पर भारत के मतदान को लेकर भी दोनों देशों की राय अलग है।

नए साल में फिर दौड़ेंगी सरकारी यात्री बसें

● बस सेवा संचालन में यात्री सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए : मुख्यमंत्री डॉ. यादव ● अगली कैबिनेट में प्रस्ताव पर लग सकती है मुहर, आदिवासी इलाकों में दौड़ेंगी इलेक्ट्रिक बसें ● ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक यात्रियों की आवश्यकता और इंटर सिटी मार्गों के महत्व को ध्यान में रखते हुए बसों का संचालन सुनिश्चित करें ● आईटी के सभी लाभ यात्रियों को सरलता से प्राप्त हों ● मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा संचालन के संबंध में ली बैठक

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा के संचालन में यात्री सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

ग्रामीण क्षेत्र के यात्रियों की आवश्यकता और इंटरसिटी मार्गों के महत्व को ध्यान में रखते हुए बसों का संचालन किया जाए। टिकट बुकिंग, बस ट्रैकिंग जैसे टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म के समस्त लाभ यात्रियों को सरलता से प्राप्त हों, इसका विशेष रूप से ध्यान रखा जाए।

उन्होंने कहा कि समस्त आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए समयसीमा निर्धारित करें तथा जल्द से जल्द प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा का संचालन आरंभ करना सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जो बस ऑपरेटर परमिट में उल्लेखित नियम शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं, उन पर कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में नवीन

यात्री बस सेवा आरंभ करने और इसकी संगठनात्मक संरचना, दायित्व तथा संचालन के संबंध में समत्व भवन में हुई बैठक में अधिकारियों को निर्देशित कर रहे थे। बैठक में अन्य राज्यों में संचालित व्यवस्था की जानकारी भी दी गई। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बस सेवा संचालन में लगे स्टॉफ के प्रशिक्षण के लिए संभाग स्तर पर बनेंगे ट्रेनिंग सेंटर – बैठक में जानकारी दी गई की शहरी, ग्रामीण परिवहन सेवा के साथ-साथ अंतर शहरी अंतर्राज्यीय नवीन यात्री परिवहन सेवा का प्रबंधन मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय होल्डिंग कंपनी द्वारा किया जाना प्रस्तावित है। क्षेत्रीय स्तर पर कंपनियां होंगी और जिला स्तर पर निगरानी के लिए भी परिवहन समितियां का गठन होगा।

राज्य स्तरीय और संभाग स्तरीय कार्यालय में कंट्रोल एवं कमांड सेंटर स्थापित किए जाएंगे। नोटिफाईड रूटस पर निविदा प्रक्रिया से ऑपरेटर का चयन तथा अनुबंध होगा। कंपनी, अनुबंधित ऑपरेटर्स को परमिट और संचालन में सहयोग प्रदान करेगी। यात्री बस सेवा संचालन में लगे स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए संभाग स्तर पर ट्रेनिंग सेंटर भी स्थापित किए जाएंगे।

अद्यतन आईटी टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस का होगा उपयोग – यात्रियों की सुविधा और बेहतर बस सेवा संचालन के लिए अद्यतन आईटी टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस का उपयोग किया जाएगा। यात्रियों के लिए ई-टिकट, मोबाइल एप, बस ट्रैकिंग, ऑक्युपेंसी देखने और भुगतान की सरलतम सुविधा उपलब्ध होगी। अनुबंधि ऑपरेटर्स के लिए ऑपरेटर ऐप, वीडियो ऑडिट सॉफ्टवेयर, फील्ड ऑडिट डैशबोर्ड आदि की व्यवस्था होगी। राज्य एवं संभाग स्तरीय कंपनियां ,कंट्रोल कमांड सेंटर सॉफ्टवेयर, बस- ऑटो-टैक्सी-मेट्रो आदि के लिए एक बुकिंग प्लेटफार्म, ऑनलाइन ई-बुकिंग तथा बसों की संपूर्ण मॉनिटरिंग के लिए बोर्ड का उपयोग करेंगी। बैठक में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री एसएन मिश्रा, प्रमुख सचिव श्री संजय शुक्ला, श्री मनीष रस्तोगी प्रमुख सचिव, विधि श्री एन.पी. सिंह उपस्थित थे।

विनोद नागर जलगांव में साहित्य गंगा प्रेरणा सम्मान से सम्मानित

भोपाल। वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, समीक्षक और स्तंभकार विनोद नागर को महाराष्ट्र के जलगांव में प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया है।

साहित्य गंगा संस्था द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव में उन्हें यह सम्मान जलगांव की लोकसभा सांसद श्रीमती स्मिता ताई वाघ ने प्रदान किया। समारोह में जलगांव के नवनिर्वाचित भाजपा विधायक राजू मामा भोले भी मौजूद रहे। समारोह में संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रियंका सोनी 'प्रीत' सहित देश के विभिन्न भागों से आए साहित्यकारों के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय साहित्यकार उपस्थित थे।

इंदौर में बदला आठवीं तक के स्कूलों का टाइमिंग

9 बजे के बाद से ही शुरू होंगे स्कूल, बर्फीली हवाओं से प्रदेश का तापमान 6 डिग्री लुढ़का

इंदौर (नप्र)। इंदौर में कड़ाके की ठंड शुरू हो गई है। इसे देखते हुए जिला प्रशासन ने स्कूलों के समय में परिवर्तन करने का निर्णय लिया है। इंदौर के प्रभारी कलेक्टर व निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने बताया कि स्कूलों के समय में बदलाव कर रहे हैं। पहली से आठवीं तक के स्कूल 9 बजे बाद ही शुरू होंगे। यह परिवर्तन तत्काल प्रभाव से लागू होगा। संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह सभी शासकीय, अशासकीय और मान्यता प्राप्त विद्यालयों में इस आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करें। प्रशासन ने ये कदम ठंड के कारण बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उठाया है। उत्तर भारत से आ रही बर्फीली हवाओं से इंदौर भी जमने लगा है। मौसम विभाग ने आज से अगले चार दिनों तक इंदौर में शीतलहर की चेतावनी दी है। साथ ही कल पहली बार एक साथ शीतलहर (कोल्ड वेव) और शीतल दिन (कोल्ड-डे) भी घोषित किया। आज भी यही स्थिति बनी हुई है। दिन और रात के तापमान में लगातार गिरावट का दौर जारी है।

विमानतल स्थित मौसम केंद्र के मुताबिक कल दिन का अधिकतम तापमान 22.1 डिग्री रहा, जो सामान्य से 7 डिग्री और परसों की अपेक्षा 0.8 डिग्री कम था। वहीं रात का न्यूनतम तापमान 8.6 डिग्री रहा, जो सामान्य से 4 डिग्री और परसों रात की अपेक्षा 0.1 डिग्री कम था। इस दौरान हवाओं की दिशा उत्तरी और उत्तर-पूर्वी रही। शीतलहर बनी हवाओं की अधिकतम रफ्तार 26 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंची, जिससे पूरा शहर कांपता नजर आया।

उज्जैन-शाजापुर में भी चली कोल्ड वेव

मंगलवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन और शाजापुर में सर्द हवाएं चलीं। वहीं, यहां कोल्ड डे भी रहा। दमोह, जबलपुर, सिवनी, नरसिंहपुर, सागर, नर्मदापुरम, रायसेन, विदिशा, राजगढ़, आगर-मालवा, धार में भी कोल्ड वेव चली। बदले मौसम की वजह से सभी शहरों में दिन का टेम्प्रेचर लुढ़क गया। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 23.4 डिग्री, इंदौर में 22.1 डिग्री, ग्वालियर में 23.2 डिग्री, उज्जैन में 23.5 डिग्री और जबलपुर में 22.0 डिग्री रहा। प्रदेश में सबसे ठंडा पचमढ़ी रहा। यहां पारा 20.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसी तरह बैतूल में 22.7 डिग्री, धार में 23.1 डिग्री, रायसेन में 22.4 डिग्री, रतलाम में 23.2 डिग्री, शिवपुरी में 25 डिग्री, दमोह में 24 डिग्री, खजुराहो में 23.8 डिग्री, नौगांव में 24 डिग्री, रीवा में 22.5 डिग्री, सागर में 23.4 डिग्री, सतना में 23 डिग्री, सीधी में 21.8 डिग्री, टीकमगढ़ में 23 डिग्री, उमरिया में 23.6 डिग्री और मलाजखंड में पारा 21.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

सीजन का सबसे ठंडा दिन और रात

मंगलवार का दिन इस सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा। वहीं कल की रात भी इस सीजन की सबसे ठंडी रात बन गई। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले कुछ दिनों तक ठंड से राहत के कोई संकेत नहीं हैं। भोपाल मौसम केंद्र ने कल जारी अपने पांच दिनों के पूर्वानुमान में इंदौर में 14 दिसंबर तक शीतलहर की चेतावनी दी है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक 15 से दिन के तापमान में थोड़ी बढ़त देखने को मिलेगी।लेकिन रात का तापमान 10 डिग्री के नीचे ही बना रहेगा। 19 दिसंबर के बाद रात के तापमान में थोड़ी बढ़ोतरी हो सकती है, लेकिन ठंड से बहुत ज्यादा राहत की उम्मीद नहीं है।

इंदौर नगर निगम ने तोड़े अवैध निर्माण

जोन-13 के विष्णुपुरी और नानक पैलेस कॉलोनी में सबह चलाई जेसीबी

इंदौर (नप्र)। इंदौर नगर निगम की रिमूवल टीम ने बुधवार सुबह दो अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई की। जोन 13 में ये कार्रवाई की गई। नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा के निर्देशानुसार बुधवार सुबह नगर निगम की टीम ने जोन 13 में दो जगह पर अवैध निर्माण हटाए। उपायुक्त लता अग्रवाल ने बताया निगम रिमूवल विभाग ने 68 विष्णुपुरी में एमओएस में किए गए 3 हजार स्क्वायर फीट क्षेत्र के अवैध निर्माण को हटाने की कार्रवाई की। इसके बाद टीम ने जोन 13 के 37 नानक पैलेस कॉलोनी में अवैध रूप से बनाए जा रहे 1500 स्क्वायर फीट पर होस्टल निर्माण को भी हटाया। इस कार्रवाई में उपायुक्त लता अग्रवाल, भवन अधिकारी अंकेश बिरथरिया, सुनील जादौन, भवन निरीक्षक विशाल पटेल, रिमूवल सहायक बबलू कल्याणे और अन्य मौजूद थे।

यातायात पुलिस की कार्रवाई

पटाखे फोड़ने जैसी आवाज वाले साइलेंसरों पर चढ़ाया रोड रोलर

इंदौर (नप्र)। इंदौर ट्रेफिक पुलिस का पटाखा फोड़ने वाले साइलेंसरों को नष्ट करने को लेकर बुधवार को कारवाई की है। भंवरकुआ इलाके में सड़को पर साइलेसरो को बिछाने के बाद उस पर रोड रोलर चलाया गया। पिछले दो माह से यातायात विभाग इस तरह की कारवाई कर रहा है। डीसीपी अरविद तिवारी ने बताया कि शहर में बुलेट के अंदर कई लोगों द्वारा उसकी आवाज तेज करने और पटाखे जैसा सांउड निकालने के लिए कंपनी का ओरजिनल साइलेंसर हटाकर उसमें मोडीफाईड साइलेंसर फीट किया जाता है। जिसमें बुलेट चलाने वाले सड़को पर शोर करते हुए निकलते है। इसे लेकर यातायात पुलिस को पहले से निदेर्शित किया गया है। कि इस तरह के वाहनो पर कारवाई करे। बुधवार को पिछले दो माह में पश्चिम इलाके में जब्त किये गए बुलेट के करीब 1 हजार के लगभग साइलेंसरों को बुधवार को भंवरकुआ इलाके में नष्ट करने का काम किया गया। जिसमें रोड रोलर की मदद से सड़कों पर इसे बिछाकर उस पर से निकाला गया।

विजयनगर में भी हुई थी कार्रवाई- इसके पहले ट्रैफिक पुलिस ने पूर्वी इलाके में साइलेंसर नष्ट करने की कारवाई की थी। जिसमें विजयनगर में करीब साढ़े तीन सौ के लगभग साइलेंसर पर से रोड रोलर चलवाकर उसे नष्ट किया गया था। डीसीपी के मुताबिक आगे भी इस तरह की कारवाई जारी रहेगी।

मंत्री इंदर सिंह परमार बोले-

एमपी में मनाएंगे भारतीय भाषा दिवस

इंदौर में बांग्लादेश पर कहा- वो भारत का ही हिस्सा, इसलिए चिंता करने का विषय

इंदौर (नप्र)। इंदौर में मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा, 'मध्यप्रदेश में हम आने वाले सालों में भारतीय भाषा दिवस मनाने का निर्णय कर रहे हैं।' उच्च शिक्षा, आयुष, तकनीकी शिक्षा कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री परमार बुधवार को इंदौर के होलकर साइंस कॉलेज में 'भारतीय भाषा संगम भारतीय विरासत का उत्सव कार्यक्रम' में शामिल हुए। मीडिया से चर्चा में उन्होंने कहा, आज गीता जयंती है। भारतीय भाषा दिवस भी है। इस मौके पर भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की भारतीय भाषा समिति, होलकर साइंस कॉलेज और विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान ने भारतीय भाषा संगम का ये उत्सव रखा है।

इंदौर में अलग-अलग राज्यों के अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। वे यहां आए हैं। अपनी परंपराओं की अपनी भाषा में प्रदर्शनी लगाई है। लघु भारत का रूप इस कॉलेज में दिखा है। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर कहा, बांग्लादेश भारत का ही हिस्सा था, इसलिए भारत के लोगों का स्वाभाविक रूप से चिंता करने का विषय है।

स्वाभाविक रूप से चिंता करने का विषय

बांग्लादेश की घटनाओं को लेकर पूछे गए सवाल पर मंत्री ने कहा, भारत सरकार कूटनीतिक दृष्टि से सब प्रयास कर रही है। इस देश के लोगों का स्वाभाविक रूप से जो सनातन के लोग हैं, दुनिया में उन सब की चिंता करने की नैतिक जवाबदारी भारत की है होती है, यहां के समाज की होती है, क्योंकि यहीं से उनके पूर्वज कभी न कभी गए हैं। मैं समझता हूं आज दुनिया का विश्व का जनमत है वह भी समझ गया है कि बांग्लादेश में जो अत्याचार हो रहा है वह बंद होना चाहिए। चाहिए वह भी कूटनीतिक प्रयास करके बांग्लादेश पर दबाव बना रहे है।

मध्यप्रदेश के संदेश को देशभर तक पहुंचाएंगे

मंत्री ने कहा, पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में भारत की जड़ों से जोड़ते हुए आमूलचूल परिवर्तन का काम चल रहा है। देश के सभी शिक्षाविद चिंतन - मनन कर भारत के दर्शन, सभ्यता, ज्ञान को ऐसे अवसरों पर प्रकट करते हैं। उन्होंने कहा, होलकर कॉलेज ने श्रेष्ठ परंपरा शुरू की है।

ढाई करोड़ की ठगी का आरोपी गिरफ्तार

दिल्ली भागा तो उसके पीछे प्लेन से पहुंची पुलिस

इंदौर के व्यापारियों से शकर देने के नाम पर लिए थे रुपए

इंदौर (नप्र)। इंदौर में शक्कर व्यापारियों से ढाई करोड़ की ठगी करने के मामले में फरार दो आरोपियों में से एक को क्राइम ब्रांच ने बुधवार गिरफ्तार कर लिया हैं। आरोपी प्लेन से मुंबई से दिल्ली भाग गया था। इसके बाद टीम भी उसके पीछे वहां पहुंची और उसे दबोच लिया गया। पुलिस आरोपी से पूछताछ करने के साथ ही उसके दूसरे साथी को भी तलाश कर रही हैं। क्राइम ब्रांच के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि मितेश नहाटा मालिक मेसर्स भूलेश्वरी शुगर पता पुणे महाराष्ट्र और उसके साथी साजन पुत्र सदाशिव पांचपूते निवासी देवधान सुरूर अहमद नगर के खिलाफ दर्शनइंटर प्राइजेज,राधा कृष्ण ट्रेडर्स,चंचल ट्रेडर्स, श्री कृष्णा ट्रेडर्स,पी योगेश चंद्र एंड कंपनी,नाकोडा शुगर ब्रोकर्स, आगम ट्रेडर्स,राजेन्द्र कुमार अजीत कुमार,महावीर किराना भंडारी की शिकायत पर केस दर्ज हुआ था। मामले में पुलिस ने मितेश नहाटा को गिरफ्तार कर लिया। वही उसके साथी साजन की तलाश की जा रही है। मितेश ने इंदौर के व्यापारियों से करीब 2 करोड़ 61 लाख रूपए शक्कर भेजने के बदले लिए थे। जिसे दिल्ली के व्यापारियों के खाते में ट्रांसफर किया गया था।

1 करोड़ 60 लाख ठगी में दो ओर गिरफ्तार- क्राइम ब्रांच ने डिजीटल अरेस्ट मामले में दो ओर आरोपियों को गिरफ्तार किया हैं। आरोपियों के नाम अल्ताफ और विवेक है। आरोपियों के पास से बैंक की पासबुक और अन्य डॉक्यूमेंट मिले हैं।

इंदौर में पति से विवाद के बाद महिला का सुसाइड

बेटी के मान कार्यक्रम के हिसाब को लेकर थी नाराज, नाबालिग भी फंदे पर झूला

इंदौर (नप्र)। इंदौर के राउ इलाके में रहने वाली एक 26 साल की महिला ने पति से विवाद के बाद सुसाइड कर लिया। बताया जाता है कि परिवार में बेटी की मान का प्रोग्राम था। पत्नी ने पति से हिसाब-किताब करने की बात की। इस पर दोनों के बीच विवाद हो गया। नाराज पत्नी ने मंगलवार शाम सुसाइड कर लिया। राउ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आशा पति सुरेश बागरी, निवासी संजय नगर केट रोड ने मंगलवार शाम फांसी लगा ली। पुलिस के मुताबिक सुरेश ने बताया कि वह प्रिंटिंग प्रेस में काम करता है। 9 नवंबर के दिन बेटी का मान का प्रोग्राम रखा था। जिसमें परिवार के लोग शामिल हुए थे। मंगलवार को इस प्रोग्राम का हिसाब-किताब करने को लेकर आशा ने पति से बात की, तो उसने कहा कि बाद में देखेंगे। इस बात पर दोनों की बहस हुई। शाम को सुरेश घर आया तो आशा फांसी के फंदे पर झूली हुई थी। बाद में उसने आसपास के लोगों की मदद से उसे उतारा। नजदीक के दो अस्पताल लेकर पहुंचा। लेकिन डॉक्टरों ने उसे एमवाय भेज दिया।

तीन साल बाद हुई थी बेटी- सुरेश ने बताया कि उसकी शादी को करीब 6 साल हो गए। बच्चे नहीं होने पर उन्होंने मान की। तीन साल बाद बेटी होने पर उसकी मान थी तो उसका प्रोग्राम किया था। सुरेश का ससुराल सोनकच्छ के पास का है। पुलिस के मुताबिक मायके पक्ष के बयान होना बाकी हैं। महिला दो बार पहले भी सुसाइड का प्रयास कर चुकी है। लेकिन इस मामले की शिकायत थाने तक नहीं आई। मामले में जांच की जा रही है।

नाबालिग ने किया सुसाइड- नंदानगर में रहने वाले एक नाबालिग ने भी फांसी लगाकर जान दे दी। पुलिस ने मामला जांच में लिया है। परदेशी पुरा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक 17 साल के सूर्यांश पुत्र रवि ने अपने घर में फांसी लगा ली। मंगलवार को परिवार ने उसका शव फंदे पर लटके देखा। परिवार ने बताया कि दो साल पहले उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। वह पिता के साथ लाईट डेकोरेशन का काम कर रहा था। परिवार में दो बहने हैं। वह माता-पिता का इकलौता बेटा है। परिवार के लोगों ने बताया कि इलाके में रहने वाली किसी लड़की से उसका अफेयर चल रहा था। इसे लेकर वह तनाव में था। पुलिस को अभी कमरे से किसी तरह का सुसाइड नोट नही मिला है।

आईसीआईसीआई बैंक के कर्मचारी ने की धोखाधड़ी

दो अकाउंट की निजी जानकारी शेयर की, पासवर्ड बदल 9 लाख रुपए निकाले

इंदौर (नप्र)। इंदौर की विजय नगर पुलिस ने स्कीम नंबर 54 स्थित आईसीआईसीआई बैंक के रिलेशनशिप मैनेजर और उसके साथी के खिलाफ फर्जीवाड़ा करने के मामले में केस दर्ज किया है। बैंक कर्मचारी ने अकाउंट की जानकारी अपने साथी से शेयर की। उसने ऑनलाइन पासवर्ड बदलकर ओटीपी जनरेट कर अकाउंट से रुपए निकाल लिए। इस मामले में बैक की तरफ से जांच होने पर कर्मचारी फंस गया। पुलिस अब मामले में जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार विजय नगर पुलिस ने आईसीआईसीआई बैंक के कलस्टर मैनेजर जयदीप पाटीदार की शिकायत पर बैंक के रिलेशनशिप मैनेजर कमल कुमावत और उसके साथी शिवम पर फर्जीवाडे का केस दर्ज किया है। जयदीप ने बताया कि अकाउंट एनालिसिस में पता चला कि दो अकाउंट ऐसे हैं जिन्हें कमल ने कई बार चेक किया है। अकाउंट डिटेल में छेड़छाड़ कर पासवर्ड बदले गए हैं। एक अकाउंट से 5 लाख 64 हजार और दूसरे अकाउंट से 3 लाख 50 हजार निकाले गए। इस मामले में कमल से पूछताछ की तो उसने अकाउंट में छेड़छाड़ करने की बात कबूली। उसने बताया कि अकाउंट से जुड़ी निजी जानकारी दोस्त शिवम को दी थी। कमल को इसमें एक निश्चित कमीशन मिला। जयदीप के मुताबिक इस मामले में टीम को कुछ और अकाउंट में भी छेड़छाड़ होने की जानकारी मिली। जिसकी जांच बैक की सर्विलांस टीम कर रही है।

शादीशुदा महिला को लिव-इन में रखकर किया रेप

जब महिला ने दूसरी शादी की तो हॉस्पिटल से ले गया; 3 महीने बाद एफआईआर

इंदौर (नप्र)। उज्जैन की एक महिला ने नीलगंगा थाने में इंदौर के एक व्यक्ति के खिलाफ रेप की एफआईआर दर्ज कराई है। मामले की जांच इंदौर की सेंट्रल कोतवाली पुलिस को सौंपी गई है। जानकारी के मुताबिक, पहली शादी के बाद पति ने महिला को छोड़ दिया। इसके बाद वह 10 महीने तक आरोपी के साथ लिव-इन में रही। फिर आरोपी के पास से चली गई और दूसरी शादी कर ली। जब बेटी के उपचार के लिए महिला इंदौर के अस्पताल आई, तो आरोपी उसे फिर अपने साथ ले गया। महिला के पति ने उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई। बाद में महिला फिर से अपने पति के पास पहुंची और तीन महीने बाद आरोपी पर एफआईआर दर्ज कराई। सेंट्रल कोतवाली पुलिस के पास मंगलवार को उज्जैन से एक मामला पहुंचा है, जिसमें 26 साल की महिला की शिकायत पर संतोष उर्फ कालिया मोगिंया निवासी मालवा मिल के खिलाफ रेप का केस दर्ज किया गया है।

पहले पति को छोड़ने के बाद आरोपी से मिली महिला- पीड़िता ने बताया कि 2017 में उसकी शादी इंदौर में हुई थी। शादी के बाद उसे दो बेटियां हुईं, लेकिन पति के शराब की आदत और झगड़ों के कारण उसने पांच साल बाद उसे छोड़ दिया। छोटी बेटी को पति ने अपने पास रखा, जबकि वह अपने माता-पिता के पास राजस्थान चली गई। जब वह पति के पास वापस लौटी, तो उसने उसे रखने से इनकार कर दिया। इस बीच उसकी मुलाकात संतोष से हुई, जो उसके पति को जानता था। संतोष के साथ वह उज्जैन में लिव-इन में रहने लगी। संतोष ने उसे और उसकी बेटी के साथ मारपीट शुरू कर दी। 10 महीने रहने के बाद महिला फिर से अपने माता-पिता के पास चली गई।

बच्ची के इलाज के बीच आरोपी महिला को ले गया- 2023 में महिला ने उज्जैन में दूसरी शादी कर ली। मई 2024 में उसे जुड़वां बच्चियां हुईं, जिनकी हालत खराब थी और दोनों को आईसीयू में भर्ती करना पड़ा। इस बीच एक बच्ची को इंदौर रेफर किया गया लेकिन इलाज के दौरान उस बच्ची का निधन हो गया। हालांकि दूसरी बच्ची का इंदौर के ही अस्पताल में इलाज चलता रहा। 9 जुलाई को जब वह अस्पताल में बेटी के साथ थी, तब संतोष कालिया अपने दो साथियों के साथ वहां पहुंचा। उसने धमकी दी कि अगर बेटी की जान बचानी है तो उसके साथ चलना होगा। इसके बाद उसने छुट्टी करवाकर महिला को अपने साथ ले गया। मालवा मिल पहुंचकर संतोष ने महिला के पति को फोन करवाया और कहा कि वह उसके साथ नहीं रहना चाहती। संतोष ने बेटी को मारने की धमकी दी, जिससे महिला को उसकी बात माननी पड़ी।

इंदौर से भुवनेश्वर के लिए मिलेगी सीधी फ्लाइट

डेढ़ घंटे में पहुंच सकेंगे जगन्नाथपुरी, नए साल से शुरू होगी इंडिगो एयरलाइंस की नई उड़ान

इंदौर (नप्र)। इंदौर एयरपोर्ट से नए साल में एक ओर नई सीधी उड़ान शुरू होने जा रही है। यह उड़ान इंदौर से भुवनेश्वर के लिए है। इसे इंडिगो एयरलाइंस जल्द ही शुरू करेगा। इससे इंदौर सीधे उड़ीसा से कनेक्ट हो जाएगा। सबसे ज्यादा फायदा जगन्नाथपुरी जाने वाले श्रद्धालुओं को मिलेगा। ट्रेवल एजेंट्स का कहना है कि यह इंदौर से ओडिशा को जोड़ने वाली पहली फ्लाइट होगी। इससे भुवनेश्वर सहित ओडिशा के अन्य शहरों तक जाने वाले यात्रियों को काफी मदद मिलेगी। इसके साथ ही भुवनेश्वर पूर्वी भारत का प्रमुख व्यवसायिक केंद्र भी है, इससे व्यापार के लिहाज से भी यह फ्लाइट काफी मददगार होगी। एजेंट्स ने बताया कि ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के एयरपोर्ट से इंडिगो एयरलाइंस नए साल में पांच नई उड़ानें शुरू करने जा रही है। जिसमें कंपनी ने भुवनेश्वर से इंदौर के लिए भी सीधी उड़ान शुरू करने की योजना बनाई है। सूत्रों की मानें तो इस उड़ान को शुरू करने की पूरी तैयारी हो चुकी है। जल्द ही इसका शेड्यूल भी घोषित किया जाएगा।

भुवनेश्वर से डेढ़ घंटे में पहुंच सकते हैं जगन्नाथपुरी

इंदौर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु जगन्नाथपुरी जाते हैं। चार धामों में से एक प्रमुख धाम कहा जाने वाला जगन्नाथपुरी हिंदुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है। यह भुवनेश्वर से 60 किलोमीटर दूर है और पुरी के सबसे नजदीक स्थित एयरपोर्ट भुवनेश्वर ही है। इसके चलते हवाई मार्ग से जगन्नाथपुरी जाने वाले यात्री भुवनेश्वर तक फ्लाइट से जाकर आगे सड़क मार्ग से पुरी जाते हैं। नई फ्लाइट शुरू होने पर यात्री इंदौर से भुवनेश्वर पहुंचकर एक से डेढ़ घंटे में जगन्नाथपुरी पहुंच सकेंगे। पुरी में साल का सबसे बड़ा उत्सव रथयात्रा होती है। 2025 में 27 जून को इसका आयोजन है। नई फ्लाइट से इस उत्सव में जाने वाले यात्रियों को भी बडी सुविधा मिलेगी।

जनवरी में शुरू हो सकती है फ्लाइट

ट्रेवल एजेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के सचिव अमोल कटारिया ने बताया कि इंदौर से भुवनेश्वर के लिए सीधी उड़ान की लंबे समय से मांग की जा रही थी। अब इंडिगो ने इस मार्ग पर फ्लाइट चलाने की तैयारी कर ली है। संभवतः जनवरी से इस फ्लाइट की शुरुआत हो सकती है। उन्होंने बताया-अब तक भुवनेश्वर या जगन्नाथपुरी जाने के लिए यात्रियों को इंदौर से हैदराबाद या दिल्ली होकर भुवनेश्वर की फ्लाइट मिलती थी। अब सीधी फ्लाइट शुरू होने से यात्रियों का समय और पैसा दोनों बचेगा। यह इंदौर का पूर्वी भारत से मजबूत कनेक्शन भी बनेगी।

संपादकीय

जलवायु विमर्श : चुनौतियां बढ़ीं

दुनिया में लगातार और खतरनाक हद तक हो रहे जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण के उपायों से सम्बन्धित जलवायु विमर्श का मुद्दा अब और जटिल होता जा रहा है। बीते तीन सालों में जिस तरह विश्व के कई देश युद्धों में उलझते जा रहे हैं, जलवायु संरक्षण का मामला हाशिए पर जाता जा रहा है, जबकि यह मुद्दा समूची मानव सभ्यता के अस्तित्व से जुड़ा है। अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चुनाव में जीत से पर्यावरणवादी पहले ही निराश थे, अब दुनिया का सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक चीन भी अब विकसित देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है। चीन का बढ़ता कार्बन उत्सर्जन, वैश्विक व्यापार में प्रभुत्व और जलवायु वित्त में योगदान से बचने की नीति ने इस पूरे विमर्श को और जटिल बना दिया है। पहले विकसित देश अमीर देशों के अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण का सामना कर रहे थे, अब चीन का रुख़ भी उन्हीं के साथ है। यही वजह है कि बीते सप्ताह अजरबैजान की राजधानी बाकू में हुई कॉप-29 की बैठक कुछ ख़ास हासिल नहीं कर पाई। बैठक की समाप्ति आते आते चीन के आधिकारिक रुख ने जलवायु विमर्श को एक नए किस्म के गतिरोध पर ला खड़ा किया जो अगले कई सालों तक इस संदर्भ में चल रहे वैश्विक प्रयासों को प्रभावित करता रहेगा। जलवायु बैठक के प्रति नए स्तर की उदासीनता तब देखी जा रही है जब हर हफ्ते दुनिया के किसी न किसी कोने में बाढ़, जंगल की आग, अत्यधिक गर्मी, चक्रवात, या मौसम की चरम स्थितियां देखने को मिल रही हैं। कॉप-29 बैठक में इस बार मुख्य मुद्दा यह था कि जलवायु कोष के नए लक्ष्य के अनुरूप 'ऐतिहासिक जिम्मेदारी के सिद्धांत' के आधार पर किसे और कितनी राशि का योगदान करना चाहिए। चूंकि इसमें सभी देशों खासकर विकसित देशों की वित्तीय जिम्मेदारियां निर्धारित की जानी थी, इस कारण इसे 'फाइनेंस कॉप' भी कहा गया। जलवायु वित्त से आशय उस आर्थिक मदद से है जो गरीब और विकासशील देशों को जलवायु संकट से बचाने के लिए पेरिस जलवायु समझौते के तहत अमीर देश जुटा रहे हैं। इसी बीच कार्बन ब्रीफ की एक रिपोर्ट आई जिसके मुताबिक चीन न सिर्फ सालाना सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक है बल्कि ऐतिहासिक उत्सर्जन में भी चीन यूरोप के 27 देशों से सामूहिक उत्सर्जन को पीछे छोड़ विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक देश बन गया है। इसके मद्देनजर विकसित देश जलवायु संकट से लड़ने के लिये बनाये गये कोष में चीन सहित कुछ मध्य-पूर्व के समृद्ध तेल उत्पादक देशों की भागीदारी तय करना चाह रहे थे, जबकि विकासशील देशों का समूह जी-77 'जलवायु कोष' के लिये 1.3 ट्रिलियन डॉलर सालाना का लक्ष्य लेकर चल रहा था। यहां ध्यान देने की बात यह है कि जहां अमीर देशों का कार्बन उत्सर्जन संतुलन की ओर बढ़ रहा है, वहीं पिछले चार-पांच दशकों में चीन का कार्बन उत्सर्जन बेतहाशा बढ़ा है। चीन ने अपने 1,000 से अधिक कोयला-आधारित बिजली संयंत्रों की मदद से अपनी अर्थव्यवस्था को 40 गुना से अधिक विस्तार दे दिया। इसके परिणामस्वरूप, आज चीन यूरोपियन संघ और अमेरिका को पीछे छोड़ दुनिया में ग्रीनहाउस गैसों का सबसे बड़ा वार्षिक उत्सर्जक बन चुका है। दरअसल मानव इतिहास में जलवायु संकट अब तक के सबसे निर्णायक दौर से गुजर रही है। इस संकट के हल के लिए क्या कुछ किया जाना है, यह 2015 के पेरिस जलवायु समझौते में तय हो चुका है। लेकिन सारा विवाद इस बात पर है कि हल को लेकर प्रयास कौन करेगा और किस हद तक करेगा? अगर इसी तरह आपसी वाद विवाद में मामला टलता रहा तो एक दिन विनाश हमारे द्वार पर होगा, जो भौगोलिक सीमाओं और राजनीतिक आग्रहों को नहीं देखेगा।

नजरिया

– प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

किताबों से फूटती हिंसा

यह सच्चाई कल्पना से परे लगती है कि विद्या के मंदिर में पढ़ाई जा रही किताबें हिंसा की रक्त रंजित इबारत भी लिखेंगी ? लेकिन हैरत में डालने वाली बात है कि यह हृदयविदारक घटना एक हकीकत बन चुकी है। देश के महानगर और शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाने वाले महानगर दिल्ली, गुड़गांव, हैदराबाद और बैंग्लौर में तो इस तरह की घटनाएं देखने में आती रही हैं, लेकिन अब मध्यप्रदेश के छतरपुर के एक सरकारी विद्यालय में 12वीं के नाबालिग छात्र ने प्राचार्य की कट्टे से गोली मारकर हत्या कर दी। प्राचार्य सुरेंद्र कुमार सक्सेना का दोश इतना भर था कि उन्होंने इस छात्र को नियमित स्कूल नहीं आने पर फटकार लगाई थी। इससे छात्र इतना नाराज हुआ कि उसने अगले दिन प्राचार्य के सिर में गोली मार दी। पुलिस ने ढिलापुर ग्राम के इस छात्र को हिरासत में ले लिया है। नशे का आदि यह छात्र छात्राओं के साथ भी छेड़छाड़ करता था। शिक्षकों को इसने धमकाने की उद्दंडता कई मर्तबा बरती थी। अतएव छात्र की दहशत इतनी रही कि इस वरदात के बाद भी कई शिक्षक उसका नाम लेने से बचते रहे। इस हत्या के बाद सवाल उठ रहा है कि छात्र के पास अवैध माना जाने वाला कट्टा कहां से आया? दरअसल आजकल समूचा बुंदेलखंड मप्र और उप्र में अवैध हथियारों के निर्माण और उनके क्रय-विक्रय का अड्डा बना हुआ है।

विद्यालयों में छात्र हिंसा से जुड़ी ऐसी घटनाएं पहले अमेरिका जैसे विकसित देशों में ही देखने में आती थीं, लेकिन अब भारत जैसे विकासशील देशों में भी क्रूरता का यह सिलसिला चल पड़ा है। हालांकि भारत का समाज अमेरिकी समाज की तरह आधुनिक नहीं है कि जहां पिस्तौल अथवा चाकू जैसे हथियार रखने की छूट छात्रों को हो। अमेरिका में तो ऐसी विकृत संस्कृति पनप चुकी है, जहां अकेलेपन के शिकार एवं मां-बाप के लाड़-प्यार से उपेक्षित बच्चें घर, मोहल्ले और संस्थाओं में जब-तब पिस्तौल चला दिया करते हैं। पाठशालाओं में घट रहीं ऐसी घटनाएं उस बर्बर, वीभत्स और निरंकुश संस्कृति की देन हैं, जिसने नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को रौंदकर बेतहाशा दौलत कमाई और फिर नवधनाढ्यों के वर्ग में शामिल हो गया। और अब आपराधिक कृत्यों को अंजाम देकर जिनका अहंकार तुष्ट हो रहा है। इस तरह की पनप रही हिंसक मानसिकता के लिए हमारी कानून व्यवस्था के साथ परिवार भी दोषी है। क्योंकि धन के बूते अभिभावक ऐन-केन-प्रकारेण बच्चों को कानूनी शिकंजे से बचा लेते हैं।

आज अभिभावकों की अतिरिक्त व्यस्तता और एकांगिकता जहां बच्चों के मनोवेगों की पड़ताल नहीं करने के लिए दोषी है, वहीं विद्यालय नैतिक और संवेदनशील मूल्य बच्चों में रोपने में सर्वथा चूक रहे हैं। छात्रों पर विज्ञान, गणित और वाणिज्य विषयों की शिक्षा का बेवजह दबाव भी बर्बर मानसिकता विकसित करने के लिए दोषी हैं। आज साहित्यि शिक्षा पाठ्यक्रमों में कम से कमतर होती जा रही है, जबकि साहित्य और समाजशास्त्र ऐसे विषय हैं जो समाज से जुड़े सभी

विषयों और पहलुओं का वास्तविक यथार्थ प्रकट कर बाल-मनों में संवेदनशीलता का स्वाभाविक सृजन करने के साथ सामाजिक विसंगतियों से परिचत कराते हैं। इससे हृदय की जटिलता टूटती है और सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के कोमल भाव बालमनों में अंकुरित होते हैं। महान और अपने-अपने क्षेत्रों में सफल व्यक्तियों की जीवन-गाथाएं (जीवनियां) व्यक्ति में संघर्ष के लिए जीवटता प्रदान करती हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे यहां ऐसा कोई पाठ्यक्रम पाठशालाओं में नहीं है, जिसमें कामयाब व्यक्ति की जीवनी पढ़ाई जाती हो ? जीवन-गाथाओं में जटिल परिस्थितियों से जूझने एवं उलझनों से मुक्त होने के सरल, कारगर और मनोवैज्ञानिक उपाय भी होते हैं।

भूमण्डलीकरण के आर्थिक उदारवादी दौर में हम बच्चों को क्यों नहीं पढ़ाते कि संचार तकनीक और ईंधन रसायनों का जाल बिछाए जाने की बुनियाद रखने वाले धीरूभाई अंबानी कम पढ़े लिखे एवं साधारण व्यक्ति थे। वे पेट्रोल पंप पर वाहनों में पेट्रोल डालने का मामूली काम करते थे। इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति ने अपने व्यवसाय की शुरूआत मात्र दस हजार रूपए की छोटी-सी रकम से की थी और आज अपनी व्यावसायिक दक्षता के चलते अरबों का कारोबार कर रहे हैं। दुनिया में कम्प्यूटर के सबसे बड़े उद्योगपति बिल गेट्स पढ़ने में औसत दर्जे के छात्र थे ? कामयाब लोगों के शुरूआती संघर्ष को पाठ्यक्रमों में स्थान दिया जाए तो पढ़ाई में औसत हैसियत रखने वाले छात्र भी हीनता-बोध की उन ग्रंथियों से मुक्त रहेंगे जो अवचेतन में क्षोभ, अवसाद और संवेदनहीनता के बीज अनजाने में ही बो देती हैं। नतीजतन छात्र तनाव व अवसाद के दौर में विवेक खोकर हत्या, आत्महत्या अथवा बलात्कार जैसे गंभीर आपराधिक कारनामे कर डालते हैं। वैसे भी सफल एवं भिन्न पहचान बनाने के लिए व्यक्तित्व में दृढ़, इच्छाशक्ति और कठोर परिश्रम की जरूरत होती है, जिसका पाठ केवल कामयाब लोगों की जीवनियों से ही सीखा जा सकता है।

शिक्षा को व्यवसाय का दर्जा देकर निजी क्षेत्र के हवाले छोड़कर हमने बड़ी भूल की है। ये प्रयास शिक्षा में समानता के लिहाज से बेमानी हैं। क्योंकि ऐसे ही विरोधाभासी व एकांगी प्रयासों से समाज में आर्थिक विषमता बढ़ी है। यदि ऐसे प्रयासों को और बढ़ावा दिया गया तो विषमता की यह खाई और बढ़ेगी ? जबकि इस खाई को पाटने की जरूरत है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो शिक्षा केवल धन से हासिल करने का हथियार रह जाएगी ? जिसके परिणाम कालांतर में और भी घातक व विस्फोटक होंगे। समाज में सवर्ण पिछड़े, आदिवासी व दलितों के बीच आर्थिक व सामाजिक मतभेद बढ़ेंगे जो वर्ग संघर्ष के हालातों को आक्रामक व हिंसक बनाएंगे। यदि शिक्षा के समान अवसर बिना किसी जातीय, वर्गीय व आर्थिक भेद के सर्वसुलभ होते हैं तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना, संवेदनशीलता और पारस्परिक सहयोग व समर्पण वाले सहअस्तित्व का बोध पनपेगा, जो सामाजिक न्याय और सामाजिक संरचना को स्थिर बनाएगा।

वैसे मनोवैज्ञानिकों की मानें तो आमतौर से बच्चे आक्रामकता और हिंसा से दूर रहने की कोशिश करते हैं। लेकिन घरों में छोटे पर्दे और मुट्ठी में मोबाइल पर परोसी जा रही हिंसा और सनसनी फैलाने वाले कार्यक्रम इतने असरकारी साबित हो रहे हैं कि हिंसा का उत्तेजक वातावरण जहां-तहां विकृत रूप लेने लगा है। यह बालमनों में संवेदनहीनता का बीजारोपण कर रहा है। मासूम और बौने से लगने वाले कार्टून चरित्र भी पर्दे पर बंदूक थामे दिखाई देते हैं, जो बच्चों में आक्रोश पैदा करने का काम करते हैं। अतएव स्क्रीन पर निरंतर दिखाई जा रही हिंसक वारदातों के महिमामंडन पर अंकुश लगाया जाना जरूरी है। यदि बच्चों के खिलौनों का समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जाए तो हम पाएंगे की हथियार और हिंसा का बचपन में अनाधिकृत प्रवेश हो चुका है।

सबसे ज्यादा नकारात्मक बात है कि हमने न तो पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान को उपयोगी माना और न ही शिक्षा के सिलसिले में महात्मा गांधी व गिजुभाई बधेका जैसे शिक्षाशास्त्रियों के मूल्यों को तरजीह दी। शिक्षा आयोगों की नसीहतों को भी आज तक अमल में नहीं लाया गया। अभी भी यदि हम वैश्विक संस्कृति और अंग्रेजी शिक्षा के मोह से उन्मुक्त नहीं होते हैं तो शिक्षा परिसरों में हिंसक घटनाओं में और इजाफा होगा ? इनसे निजात पाना है तो जरूरी है कि तनावपूर्ण स्थितियों में सामंजस्य बिठाने, महत्वाकांक्षा को तुष्ट करने और चुनौतियों से सामना करने के कौशल को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। गांधी व गिजुभाई के सिद्धांतों को शिक्षा का मानक माना जाए। गुरुजन भी अकादमिक उपलब्धियों के साथ बाल मनोविज्ञान का पाठ पढ़ें? इसे भक्त कवि सूरदास की कृष्ण की बाल लीलाओं से भी सीखा जा सकता है। जिससे शिक्षक बालकों के चेहरे पर उभरने वाले भावों से अंतर्मन खंगालने में दक्ष हो सकें?

राजनीति

अनिल ठाकुर

लेखक स्तंभकार हैं।

इंडी गठबंधन के अस्तित्व के लिए नेतृत्व परिवर्तन

हरियाणा के बाद महाराष्ट्र में करारी हार से इंडी गठबंधन में राहुल गांधी की नेतृत्व क्षमता को साथी दलों से चुनौती मिल रही है। ये चुनौती इसलिए भी मिल रही है क्योंकि राहुल गांधी ने नेतृत्व चुनाव या सर्वसम्मति से नहीं वरन तकनीकी तरीके से हथिया लिया था। राष्ट्रीय पार्टी होने से पूरे देश में कांग्रेस के पास कार्यकर्ताओं की एक बड़ी फौज है, विशेष रूप से उत्तर एवम पश्चिमी भारत में, जबकि सपा, आरजेडी, डीएमके, बीआरएस जैसे क्षेत्रीय दल अपने अपने राज्यों तक सीमित है। सपा जैसे कुछ दलो का प्रभाव अन्य राज्यों में है, लेकिन वह विचारधारा से अधिक मजबूत स्थानीय नेतृत्व की वजह से।

मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय दलों एनसीपी, बीएसपी, आप एवम कम्युनिस्ट पार्टी की भी कमोबेश यही स्थिति है। विचारधारा के रूप में तो वे सशक्त है मगर वोट में परिवर्तन करा सके इतने मजबूत नहीं है। राज्यों में क्षेत्रीय दलों के सामने अन्य क्षेत्रीय दलों की चुनौती भी रहती है। कांग्रेस की पूर्वी एवम दक्षिणी राज्यों में भी अच्छी पकड़ है। यही कारण था कि इंडी गठबंधन के समय संयोजक या अध्यक्ष के रूप में कोई नाम तय नहीं हो पाया। गठबंधन सिर्फ इसलिए बन पाया क्योंकि सभी के सामने बीजेपी को पराजित करना एक मात्र लक्ष्य था। ममता बनर्जी के हाल ही में दिए गए बयान से यह स्पष्ट है कि विपक्षी गठबंधन की परिकल्पना उनकी है एवम वे इसका नेतृत्व भी करना चाहती थी। उनकी इस परिकल्पना के असली सूत्रधार थे, उस समय के उनके चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर उर्फ पीके। इस सिलसिले में ममता ने कई बार दिल्ली के दौरे कर अन्य प्रमुख नेताओं से मुलाकात भी की थी। मगर वे राहुल गांधी का नेतृत्व स्वीकार करने के लिए राजी नहीं थी। इसके बाद केसीआर ने इसे आगे बढ़ाया मगर नेतृत्व की महत्वकांक्षा के चलते असफल रहे। बाद में नीतीश बाबू ने मंजे हुए राजनीतिज्ञ कि तरह कमान अपने हाथ में लेते हुए कांग्रेस समेत अन्य दलों को पटना में इकट्ठा किया। नेतृत्व करने की अपनी महत्वकांक्षा को उजागर ना करते हुए उन्होंने संयुक्त मोर्चे के गठन को क्रियान्वित किया। कांग्रेस का प्रारंभ से ही यह दावा था कि विपक्षी मोर्चे का नेतृत्व उसके नेता राहुल गांधी करे।

सबसे बड़ी एवम राष्ट्रीय पार्टी होने से कांग्रेस ने मोर्चे की कमान अपने हाथ में ले ली एवम किसी अन्य को संयोजक नहीं बनने दिया ताकि बाद में वह नेतृत्व का दावा कर सके। इस तरह इंडी गठबंधन के विघटन का बीज इसके गठन के साथ ही पड़ गया था, जो बाद में नीतीश बाबू के एनडीए के साथ जाने से फला फूला। ममता दीदी ने भी कुछ मीटिंगों में अनुपस्थित रहकर इससे किनारा करना शुरू कर दिया था। कांग्रेस को आशा थी कि 2024 लोकसभा चुनाव के पहले मप्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ में उसे सरकार बनाने में सफलता मिलेगी उसके बाद राहुल गांधी का नेतृत्व सभी सहज स्वीकार्य कर लेंगे। लेकिन तीनों राज्यों में बुरी हार से उसके सपनों पर पानी फिर गया। फिर भी अघोषित रूप से कमान कांग्रेस के पास ही रही। लोकसभा चुनाव में गठबंधन की महाराष्ट्र एवं यूपी में अप्रत्याशित जीत एवम राहुल गांधी को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा मिल जाने से वे विपक्ष के नेता के रूप में भी मान्य हो गए। यूपी में सपा की लोकसभा चुनाव में जीत का पूरा श्रेय अखिलेश को जाता है, इसलिए कांग्रेस से कम सीटें होने के बावजूद वे स्वयं को राष्ट्रीय नेता मानने लगे है। नेतृत्व की महत्वकांक्षा के जागते ही अखिलेश ने महाराष्ट्र में महा आघाड़ी की हार के बाद संसद में राहुल गांधी के कुछ मुद्दो से दूरी बना अलग रुख अपनाया। टीएमसी गठबंधन के घटक दल होने के बावजूद शुरू से ही बंगाल में अपने हितों एवम वोट बैंक को ध्यान में रखते हुए अलग ही निर्णय लेती है। भारत जोड़ो यात्रा एवं उसके बाद हिमाचल तथा कर्नाटक में सरकार बनने से राहुल गांधी को यह भ्रम हो गया था कि वे बीजेपी को टक्कर देने वाले एकमात्र नेता है। उनकी इस गलतफहमी को बढ़ावा देने में उनके आसपास के कुछ चाटुकार नेताओं का हाथ है जो उनके नाम के सहारे संगठन पर कब्जा जमाए हुए है। इनमें से अधिकांश नेता जमीनी राजनीति से अनभिज्ञ एवं वामपंथी विचारधारा समर्थक है। कांग्रेस की एक कमजोरी यह है कि उसके नेता अपने बयानों से पार्टी को ज्यादा नुकसान पहुंचाते है, इनमें स्वयं राहुल गांधी से लेकर अधिरंजन चौधरी, नाना पटोले, दिग्गविजय सिंह जैसे नामों कि एक लंबी फेहरिस्त है। कांग्रेस का दुर्भाग्य यह भी है कि हाई कमान जिस नेता को राज्य में आगे बढ़ाने का प्रयास करता है वो ही उसके लिए मुश्किल खड़ी कर देते है, नवजोतसिंह सिद्धू, अशोक गेहलोत, अधिरंजन चौधरी, नाना पटोले जैसे नेता इसी श्रेणी के है। लगातार हार से पार्टी में राहुल गांधी के विरुद्ध जब आवाजे उठने लगी तो गांधी परिवार ने प्रियंका वाड्रा को यूपी चुनाव से आगे बढ़ाने का प्रयास किया लेकिन वहां वे कुछ कर नहीं पाई। इसके विपरीत यह धारणा बन गई कि उनका अलग गुट है एवं पार्टी कि कमान वे अपने हाथ में लेना चाहती है। राहुल गांधी की कमजोरी यह है कि एकमात्र सफलता से वे यह मानने लगते है कि जनता उनकी नीतियों एवं बयानों का भारी मात्रा में समर्थन कर रही है। जबकि अधिकांश जगह कांग्रेस साथी दलों के समर्थक वोट बैंक के सहारे सफल हुई है। कांग्रेस के अपने अंतर्विरोध एवम गुटबाजी उसके पतन का एक अन्य प्रमुख कारण है। कई बड़े युवा नेताओं के पार्टी छोड़ने को राहुल गांधी ने कभी गंभीरता से नहीं लिया।

अगले लोकसभा चुनाव 2029 में होने है उसके पहले देहली, यूपी, बिहार जैसे कुछ प्रमुख राज्य है जहां विधान सभा चुनाव है। इन राज्यों में क्षेत्रीय दल ज्यादा मजबूत है, एवम कांग्रेस का विरोध कर अस्तित्व में आए है। ये दल कभी नहीं चाहेंगे कि उनके राज्य में कांग्रेस फिर से मजबूत हो। किसी भी स्थिति में इन दलों के लिए कांग्रेस की नीति या नेतृत्व को स्वीकार करना लाभदायक नही हो सकता। राहुल गांधी का लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में व्यवहार भी पद की गरिमा के अनुकूल नहीं माना जा रहा है। संसद के नए सत्र के पहले दिन उनकी अनुपस्थित संसदीय परम्परा के अनुकूल नहीं थी। सदन में चर्चा के दौरान नींद या झपकी लेने को कैसे सही ठहराया जा सकता है। हर मुद्दे पर शोर शराबा एवम वॉक आउट से भी कुछ विपक्षी दल सहमत नहीं है।

इन सभी घटनाओं से विपक्षी दलों की साख को भी नुकसान पहुंचता है एवम मतदाताओं के छिटक जाने डर बना रहता है। कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के साथ सपा, आरजेडी जैसे कुछ दल है, मगर उपचुनाव की हार से उन्हें हिंदू एकता शक्ति का आभास भी हो गया हो, शायद अब ये अपनी नीति में कुछ परिवर्तन कर हिंदू मतदाता को लुभाने का प्रयास करेंगे। अडानी, अंबानी मुद्दे से तो इन नेताओं ने दूरी बना ही ली है।

उपरोक्त कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि इंडी गठबंधन को अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो उसे नेतृत्व किसी अन्य नेता को सौंपना होगा। अभी इस दौड़ में ममता सबसे आगे है। मगर ममता बंगाल में कितनी ही शक्तिशाली क्यों ना हो, उत्तर भारत में उनकी स्वीकार्यता नहीं के बराबर है। अखिलेश सपा प्रमुख एवं यूपी के नेता होने से उत्तर भारत में परिचित चेहरा है,मगर उनकी मुस्लिम तुष्टिकरण, जाति एवं वंशवाद आधारित राजनीति अन्य राज्य के मतदाता स्वीकारेंगे ऐसा नहीं लगता। ऐसी स्थिति मे शरद पंवार और केजरीवाल दो ऐसे नेता है जो अभी तक बैलेंस बना कर बीजेपी को टक्कर दे रहे थे। मगर शरद पंवार की राज्य चुनाव में हार ने उनके दावे को कमजोर कर दिया। फिलहाल केजरीवाल के लिए देहली चुनाव चुनौती है, यदि वे पुनः अपनी पार्टी को बहुमत दिला पाए तो उनका दावा मजबूत हो जायेगा। केजरीवाल फिलहाल ममता के समर्थन में है, लेकिन वे हवा के रुख के साथ चलने वाले नेता है, आगे कितना कायम रहेगें निश्चित नहीं है। सबसे विकट स्थिति कांग्रेस की है, राहुल गांधी की जगह किसी अन्य के नेता चुने जाने से गठबंधन में उनकी कोई हैसियत नहीं रह जायेगी। ऐसे में कांग्रेस के गठबंधन में बने रहने का क्या औचित्य रह जायेगा? 2029 चुनाव के मद्दे नज़र कांग्रेस के लिए कोई फैसला लेना दुविधा जनक होगा। मगर यह तय है कि एक चुने हुए सर्वमान्य नेता के बिना इंडी गठबंधन का अस्तित्व खतरे में है।

ममता बनर्जी और इंडिया गठबंधन का नेतृत्व

मतांतर

सुसंस्कृति परिहार

लेखक स्तंभकार हैं।

ये बात यकीनन सच है कि कांग्रेस पार्टी विभिन्न चुनावों के दौरान अपना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई है किंतु इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है उसके लिए सिर्फ ईवीएम जिम्मेदार है। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व नहीं चाहता कि कांग्रेस पनपे।

यदि गठबंधन के साथी सूत ना कपास जुलाहों में लठ्ठम लठ्ठा अभी से करने लगेंगे तो इससे भाजपा का पथ आसान होगा। एक हैं तो सेफ हैं की रणनीति इंडिया गठ बंधन को अपनानी चाहिए। सारे मनोमालिन्य भूलकर ही देश से फासिस्टवादी पार्टी भाजपा को हटाने संकल्पबद्ध होना पड़ेगा।

जहां तक सवाल ममता बैनर्जी का है वे भले बंगाल पर एकाधिकार रखती हों किंतु उनकी पार्टी और तथाकथित उनको समर्थन देने वाली पार्टियों का वजूद सिर्फ एक राज्य तक सीमित है।उनकी संपूर्ण देश में पहचान भी नहीं है। कुछ भी हो विपक्ष के नेता राहुल गांधी का होल्ड पूरे देश में भारत जोड़ो यात्रा से हुआ है। उनकी पहचान गांधी नेहरू खानदान से कम उनके अपने कार्यकलापों से ज़्यादा हुई है उनका व्यक्तित्व भाजपा के तानाशाह रवैए के विरोध से निर्मित हुआ। इसकी तुलना में ममता कमजोर नज़र आती हैं। दूसरे उनकी पार्टी तृणमूल के तेवर इतने तीखे होते हैं कि कभी कभी संसद की गरिमा आहत होती है जबकि राहुल गांधी का विरोध गंभीर और सहज होता है।आज ऐसे प्रतिपक्ष नेता की ज़रूरत है जो आ बैल मुझे मार की भाषा से दूर हो।

अहम् बात यह भी है ममता भाजपा सरकार से जुड़ कर मंत्री भी रह चुकी हैं इसलिए उन पर विश्वास करना भी भूल हो सकती है।यही हाल समाज वादी पार्टी का भी रहा है। कब कौन किस पाले में बैठ जाएं कहां नहीं जा सकता। इस लिहाज़ से राहुल उचित नज़र आते हैं।

राहुल गांधी में जो खामियां हो उसे मिल-बैठकर बताया और सुलझाया जा सकता है। तुनकमिजाज होकर रूठना ग़लत होगा। राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनना चाहते हैं यह ख्याल गलत है। उनका लक्ष्य संविधान बचाने और देश में एका लाना है। उन्होंने जिस तरह इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों को जिताने के प्रयास किए वे सराहनीय हैं। पहले ममता जी संसद में इंडिया गठबंधन सहमत से पहुंच जाए फिर नेतृत्व की बात जायज़ होगी। जीत के बाद कोई भी प्रधानमंत्री बन जाए उसे देश की अवाम हमेशा की तरह अब स्वीकार कर लेगी अब तक के तमाम प्रधानमंत्रियों को उसने सिर आंखों में बिठाया है। धैर्य रखिए।

इसलिए गठबंधन के समस्त दलों को एका रखते हुए प्रयास करने होंगे तभी वे सफल होंगे। ये टकराव हमें आगत चुनाव में मात दिलाने वाले साबित हो सकते हैं क्योंकि भाजपा ऐसे अवसरों का अक्सर भरपूर लाभ तिल का ताड़ बनाकर लेती रही है।फ़िर उनके भोंपू भी। इसलिए सावधान रहे इंडिया गठबंधन।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

पूरन सरमा

लेखक व्यंग्यकार हैं

लड्डू निर्माण और लड्डू लेखन !

सर्दियों मे लड्डू देसी घी वाले हों तो स्वाद और स्वास्थ्य की बन आती है। पहले हमारे यहाँ भी लड्डू बना करते थे, पूरा मेवा डालकर। मेरे बच्चे की माँ इस लड्डू निर्माण परियोजना से सदैव डरती रहती है। इसके पीछे दो ही कारण मुख्य है, एक तो घर में रोटे की लड़ाई और दूसरा इस परियोजना की क्रियान्वितों में होने वाला शारीरिक कष्ट। लेकिन इस बार बच्चे ने उस दिन जिद कर ली जब एक मासिक पत्रिका से रचना प्रकाशनोपरांत सौ रूपये का धनादेश प्राप्त हुआ। बच्चा मेरे पास आकर बोला-'पापा, आप इतने बड़े लेखक हैं, क्या हमारे घर में देसी घी के लड्डू नहीं बन सकते ? मेरा मतलब सर्दियों में लड्डू शरीर के लग जाते हैं और व्यक्ति को कुराग्र बनाते हैं और मैं कुशाग्र हो गया तो बी.ए. अंतिम वर्ष की यह परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर सकता हूँ।'

मैं बोला-'बेटा लड्डुओं के भरोसे ही तुम्हारी प्रथम श्रेणी अटकी हुई है तो तुम्हारी माताजी को तैयार करो, मैं अभी घी और मेवा लेकर आता हूँ। सब्सिडी मनी तो एक मासिक पत्रिका से आ चुकी है, लेकिन मूलधन पचहत्तर प्रतिशत और चाहिए, वह प्राप्त करो, बाकी राशि मैं किसी दैनिक पत्र में लड्डू लेखन करके हथिया लूंगा और इस तरह हमारा घर भी देसी घी की सुगंध से भर सकता है। यदि तुम्हारी माता श्री की भुजाओं में आटा सेंकने का बल बचा हो तो तुम उसका भरपूर लाभ उठाओ। कमर दर्द की बीमार है, यदि वह हिम्मत जुटा ले तो तुम्हारे लड्डू खाने का सपना साकार हो सकता है।'

तभी पत्नी भी वहीं आ गई बोली-'लड्डू तो बना दूंगी, लेकिन आपको इसके निर्माण कार्य में हाथ बंटाना होगा। अकेले यह परियोजना मैं अपने हाथ में नहीं ले सकती। लड्डू खाने को तो सब तैयार लेकिन मेहनत कोई नहीं करना चाहता। साथ ही आप यह भी वादा करिये कि आप लड्डू लेखन करेंगे।' मैं बोला-'लड्डू लेखन आडर ऑफ्डेट हो गया है। कौन छापेगा लड्डू पर लिखा निबंध ?' पत्नी बोली-'आपके नाम से सब छप जाता है। गतवर्ष आपने आलू के रायते की विधि लिखकर एक महिला पत्रिका से दो सौ रूपये झटके थे, तो ये तो लड्डू लेखन से आराम से चार सौ चित्त होंगे। फिर आप तो एक लैख को कभी-कभी दो बार भी छपवा लेते हैं। इसलिए लड्डू निर्माण का रिस्क लिया जा सकता है।'

तभी बच्चा बोला-'लिखने के भरोसे तो इस घर में लड्डू अगले शीतकाल में बनेंगे। आपकी रचनाएं साल-साल भर तक नहीं छपती। फिर पारिश्रमिक भी छपने को छः माह बाद प्राप्त होता है। इसलिए लड्डू निर्माण की सामग्री सेठी स्टोर से उधार ली जा सकती है। उनको हम धीरे-धीरे चुका देंगे।'

मैं बच्चे की योजना सुनकर गदगद हो गया और बोला-'वाह बेटा खूब, उधार के लड्डुओं का आनंद ही कुछ और है। मैं अभी सारी सामग्री उधार लेकर आता हूँ। तुम्हारा इस शीतकाल में लड्डू खाना परमावश्यक है। तुम मेरा भविष्य हो। आज तुम्हें लड्डू मैं खिलाता हूँ, कल जब बुढ़ापा आयेगा तो तू हमें खिजयेगा।'

इस योजना पर पत्नी ने भी सहमतिजताई और उसकी क्रियान्विती के प्रतिफलमें हम आजकल सपरिवार लड्डू खा रहे हैं। बच्चे को लड्डू ज्यादा खिला रहे है, क्योंकि उसकी कुशाग्रता और श्रेणी इन्हीं पर टिकी है और मैं लड्डू खाते हुये लड्डू लेखन में भी लगा हुआ हूँ।

कैंसर और आयुर्वेद

सुधीर मोता

लेखक साहित्यकार हैं।

बेहतर होता इस पर आयुष मंत्रालय भी अपनी राय रखता

अपनी पत्नी के कैंसर रोग से पूर्णतःमुक्त होने संबंधी नवजोत सिद्धू द्वारा आहूत प्रेस काफ्रेंस का वीडियो और अन्य सामग्री संचार माध्यमों पर कई दिनों सरगर्म रहा। इसमें और गर्मी आ गई जब छत्तीसगढ़ की एक संस्था ने उन पर 850 करोड़ रू के दावे का एक केस दायर कर दिया। कोर्ट ने यह दावा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और पालन करने न करने की आपकी इच्छा का हवाला देते हुए खारिज कर तो दिया पर यह पूरा सूचना क्रम कई कोणों से देखे जाने की मांग करता है। और सबसे अधिक ध्यान अगर कोई बिंदु इसमें मांगता है तो वह है आयुर्वेद की इस पर चुप्पी। पूरे क्रम में कहीं भी आयुर्वेद के स्रोतों की ओर से कुछ न कुछ कहा गया हो यह आमतौर पर सामने नहीं आया।

यदि सचमुच में श्रीमती सिद्धू रोगमुक्त हो गई हैं तो यह उनके परिवार के ही लिये ही नहीं पूरी दुनिया के लिये बहुत बहुत अच्छी खबर है। इसके प्रतिवाद में भी कई वक्तव्य प्रवाहित हैं। सिद्धू जी यदि यह भी जानकारी देते कि वे साथ साथ किसी अन्य पद्धति का उपचार नहीं ले रहे थे तो आयुर्वेद या प्राकृतिक पद्धति को एक बड़ा समर्थन मिलता। हाल ही में उनका एक और वीडियो सामने आया है जिसमें उन्होंने इस उपचार को सहयोगी बताते हुए प्राकृतिक उपायों का समर्थन तो किया पर वे यहां भी यह बात खुल कर कहने से बचे कि वे कोई ऐलोपेथिक उपचार ले रहे थे या नहीं। उनकी पत्नी जो स्वयं एक डॉक्टर हैं ने आयुर्वेद के पक्ष में बात तो की पर वही शैली अपनाई। इस समय उन परिवारों में कई तरह के विचार जन्म ले रहे होंगे जिनके परिजन कैंसर ग्रस्त हैं। कैंसर ग्रस्त होने की प्रथम सूचना ही अति त्रासद होती है और बाद में तो पूरे कुटुंब की स्थिति किसी तूफानग्रस्त द्वीप में फंसे जीव की तरह हो जाती है , जो पल पल तरह तरह के संकट झेलता है, जो हर हलचल में सहायता आने का संकेत देखता है।

कामना करें कि श्रीमती सिद्धू स्थायी रूप से कैंसर मुक्त हो चुकी हों। यहां प्रश्न उन पर उठते हैं जिन्होंने कैंसर उपचार के दायित्व उठा रखे हैं। आयुर्वेद के साथ सबसे बड़ी कमी यह है कि वह प्रामाणिकता के आंकड़े नहीं रखता और रखता है तो सविवरण प्रचारित नहीं करता। इस पद्धति तथा अन्य का भी पूरा द्वंद्व अपने को सही और दूसरे को गलत प्रचारित करने में व्यतीत होता है। व्यक्तिगत अनुभव पा चुके लोग यह मानते हैं कि कैंसर का उपचार प्रकृति में ही है। इस रोग से ग्रस्त होने पर इससे मुक्ति प्राकृतिक साधनों में ही है पर कुछ भी सप्रमाण लिपिबद्ध नहीं है। अगर है तो वह प्रामाणिक स्रोतों के साथ जनजन को उपलब्ध क्यों नहीं है ? इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री दिशा देती दिखती है पर अंततः तीसरे चौथे चरण में पहुंची बीमारी की नियति किसी अधूरे बने पुल पर तेज़ दौड़ते वाहन जैसी होती है जिसके एक के बाद एक उपकरण अनियंत्रित होते जाते हैं और पुल से उसे गिरना ही है। अनुभव कहते हैं कि एलोपेथी के पास प्रमाण हैं आंकड़े हैं और वह जिस तरह भी हो प्रारंभिक कैंसर को परास्त कर लेती है। अंतिम चरणों के कैंसर को पेलियेटीव उपचार से लंबित कर सकती है। पर हमें इस पद्धति से जुडी व्यावसायिकता और निदान की चूकों पर भी आलोचक दृष्टि रखना चाहिये। सिद्धू जी का अपनी पत्नी के पूरी तरह ठीक हो जाने का दावा समय की कसौटी पर रहेगा क्योंकि चौथे चरण के कैंसर के मामलों में मेटास्टेसिस याने फैलाव के कारण वह बार बार लौटता है और हर आक्रमण के बाद अंततः अपने शिकार को और कमज़ोर करते हुए परास्त कर ही देता है। यही प्रचलित जानकारी है और अनुभव समर्थित भी।

काश वर्तमान घटनाक्रम से सीख ले कर हम कुछ कर सकें। हमारी आर्मी नेवी और एयर फोर्स मिल कर यह युद्ध जीत सकते हैं। हमारा इससे तात्पर्य आयुर्वेद, ऐलोपेथी, होमियोपैथी, यूनानी आदि है। भारत के आयुष मंत्रालय का नाम आयुर्वेद योग यूनानी सिद्ध और होमियोपेथी के प्रथम अक्षरों को मिलाकर ही बना है। यह बहुत उपयुक्त समय था जब इस मंत्रालय के सूत्र कुछ बात कहते या अधिकृत वक्तव्य देते। संभवतः भारत एक अकेला देश है जहां इतनी चिकित्सा पद्धतियों को

इस तरह अधिमान्य किया गया है कि एक अलग मंत्रालय इस कार्य के लिये बनाया गया। इस पर बहुत विस्तृत कार्य हो रहा है जो कि स्वागत योग्य है। पर लगता है कहीं गति बहुत धीमी है या शोध कार्यों में कोई बाधा है। यदि ऐसा है तो उसे सुधारा जा सकता है और नहीं है तो प्रगति को सार्वजनिक किया जा कर जनसाधारण को संशय मुक्त किया जाना चाहिये यह एक बहुत बड़ी मांग लग सकती है कि अब भारत को कैंसर से युद्ध में दुनिया की आमद रोकने के लिये किया जाये तो मानवता का बड़ा हित होगा क्योंकि वही अधिक कारगर होगा। हमारी उपचार के लिये आर्थिक मदद के कार्यों को भी डायग्नोसिस या निदान की जांचों को सस्ता करने की ओर भी मोड़ना अधिक आवश्यक है। खड्ड में गिर कर त्राहि-त्राहि करने से श्रेयस्कर उस खाई में गिरने से बचना है। यह ठीक है कि प्लास्टिक से ले कर कीटनाशकों के प्रयोग पर पर नियंत्रण तक कई तरह के कार्य किये अगुवाई करना चाहिये। पर हमारे पास प्रकृति में बिखरे उपचारों की जानकारी का खज़ाना है जिसका हमें और अधिक निष्ठा से उपयोग करना चाहिये। पश्चिम की ओर हर बात में तकना ठीक नहीं।

यह भी मानना ही होगा कि जितनी राशि और श्रम कैंसर के उपचार और उसके शोध पर यह दुनिया व्यय करती है उसका चतुर्थांश भी कैंसर की जा रहे हैं। पर सच यह है कि इनमें से कोई भी अपने काम में इतना गंभीर नहीं है कि हमारे शरीर के प्रकृति निर्मित दुर्ग को पूर्ण सुरक्षा दे सके। इसका बड़ा उदाहरण गर्भाशय कैंसर के बचाव के लिये यौनात्सुकता की वय से ठीक पूर्व बालिकाओं के लिये वरदान रूप में उपलब्ध वेक्सीन लगवा देने के अभियान के प्रति हमारी चहुंओर व्याप्त उदासीनता है। क्या एक भूतपूर्व क्रिकेटर जो आज भी सेलिब्रिटी तो है ही, इस कार्य की कड़ी बनेगा? यह उन लोगों के सामने एक चुनौती होगा जो सारी नैतिकता भूल पैसों के लिये उस अखाद्य का निष्ठापूर्वक प्रचार कर रहे हैं जो कैंसर का प्रामाणिक जनक है। उनका यह कार्य यह सिद्ध करता है कि हम इस बीमारी को दुनिया से दूर रखने के कार्य में न केवल बिलकुल भी गंभीर नहीं है बल्कि अपने आर्थिक स्वार्थों की तुष्टि के लिये हम किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

वर्तमान संदर्भ से नीम हल्दी आदि पूरक उपचारों की ओर हमारा ध्यान गया है तो अपने से प्रश्न कर सकते हैं कि प्राकृतिक पद्धति से अपने शरीर को सुरक्षित रख सकने के लिये हम पूरी तरह निष्ठा से क्यों नहीं जुट रहे हैं। जिस तरह इस के विरोध में लोग आगे आ रहे हैं उस तरह समर्थन का एक भी वक्तव्य अब तक आयुर्वेदिक या प्राकृतिक चिकित्सा से जुड़े किसी भी व्यक्ति या संस्था की ओर से क्यों नहीं आया है? नवजोत सिद्धू का दावा बहुत बड़ी कसौटी पर है। अंततः जो तथ्य सामने आयें भारत सरकार के मंत्रालय को भी इसमें सामने आना चाहिये। गैर ऐलोपथिक, पारंपरिक या वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियां स्वयं मुख्य धारा में आने के लिये सामने क्यों नहीं आती? बल्कि भारत को क्यों नहीं आगे आना चाहिये जब उसके खज़ाने में तरकश के तीरों की तरह बहुत कुछ है? हां, प्रत्यक्षता और प्रामाणिकता दोनों की ज़रूरत रहेगी।

सोनपुर का पशु मेला

– चेतनादित्य आलोक

लेखक रांची निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जहां जुटते हैं दुनिया भर से लाखों पर्यटक

विभिन्न मानव सभ्यताओं और संस्कृतियों के नदियों के किनारे आरंभ और विकसित होने के प्रमाण हमारे धार्मिक ग्रंथों के अलावा इतिहास की पुस्तकों में भी उपलबध हैं। इसका एक जीता-जागता प्रमाण बिहार के सोनपुर में प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाने वाला विश्व विख्यात 'पशु मेला' भी है। गौरतलब है कि 'मोक्षदायिनी' गंगा और 'नारायणी' के नाम से विख्यात कल्याणकारिणी गंडक नदी के संगम पर स्थित ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक महत्व वाले बिहार के सोनपुर क्षेत्र में लगने वाला यह पशु मेला भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है। सोनपुर मेले को 'हरिहर क्षेत्र मेला' तथा 'छत्तर मेला' के नाम से भी जाना जाता है।

बता दें कि दुनिया का यह संभवतः एकमात्र ऐसा मेला है, जहां पर पहले सुई से हाथी तक क्रय-विक्रय के लिए उपलब्ध होते थे। हालांकि, प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में लगने वाले उक्त मेले का स्वरूप अब काफी बदल चुका है, लेकिन प्रसन्नता इस बात की है कि लोगों के बीच में इसका आकर्षण आज भी कम नहीं हुआ है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष इस मेले का आनंद लेने, इसका साक्षी बनने तथा इसमें भागीदारी निभाने न केवल भारत के विभिन्न राज्यों, बल्कि दुनिया भर के देशों से लाखों पर्यटक सोनपुर क्षेत्र के मेला स्थल पर पहुंचते हैं। देखा जाए तो इस सोनपुर मेले का विशेष धार्मिक-आध्यात्मिक महत्त्व होने के साथ-साथ विराट सांस्कृतिक एवं कलात्मक महत्व भी है।

मेले के प्रमुख आकर्षणों में विभिन्न धार्मिक-आध्यात्मिक परंपराओं एवं रीतियों के निर्वहन के अतिरिक्त विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्यिक गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों, पेंटिंग एवं क्विज प्रतियोगिताओं तथा पुस्तक मेले का आयोजन शामिल है। साथ ही, इस वर्ष मेले में थिएटरों को खेल-तमाशे का लाइसेंस मिलने के बाद रंगारंग कार्यक्रमों के आयोजन के कारण मेले की रौनक काफी बढ़ गई है। मेले में पहुंचे छह प्रमुख थिएटर, आधुनिक संगीत और रोशनी से सजे हुए, दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। विशेष रूप से महिलाओं के नृत्य के मजे लेने के लिए मेले में लोगों की भीड़ अधिक लगने लगी है। वहीं, इस मेले में आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने का एक बड़ा कारण पटना और सोनपुर के बीच जेपी सेतु का निर्माण पूरा होना भी है। जाहिर है कि मेले में आने वाले लोगों की संख्या में भारी वृद्धि होने से थिएटरों के साथ-साथ मेले की रौनक भी काफी बढ़ गई है। देखा

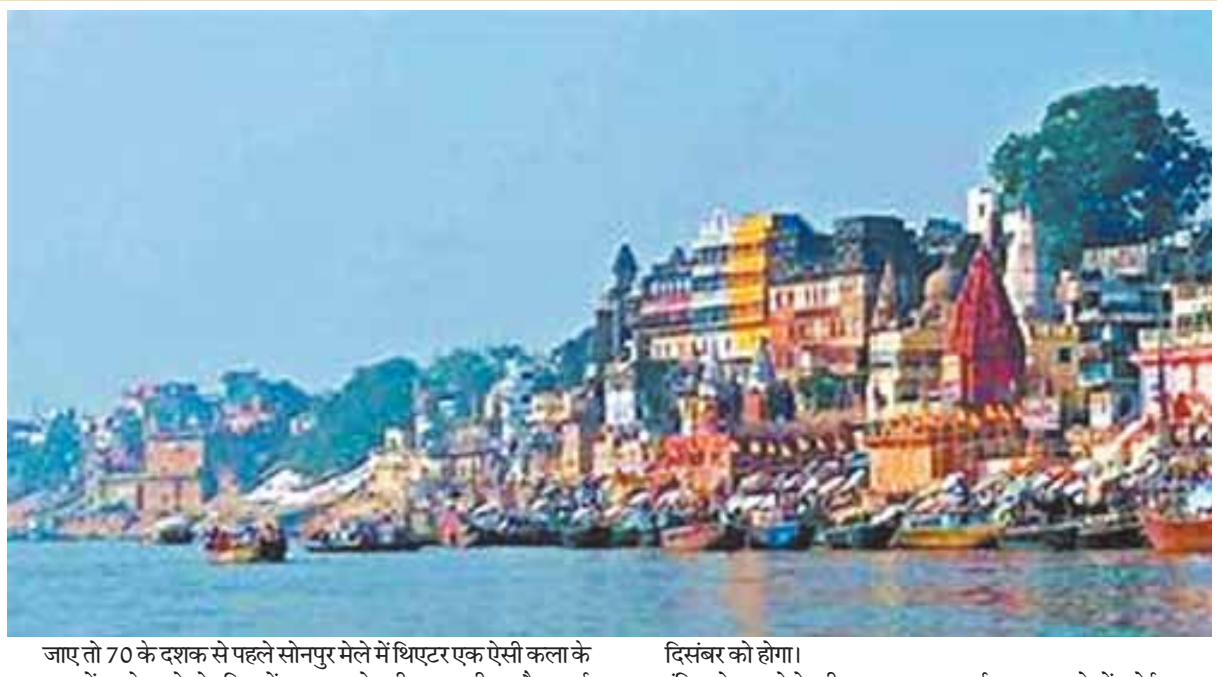

जाए तो 70 के दशक से पहले सोनपुर मेले में थिएटर एक ऐसी कला के रूप में जाने जाते थे, जिसमें गजल, लोकगीत, शास्त्रीय और अर्द्ध शास्त्रीय संगीत से समा बांधा जाता था। उन दिनों लोकप्रिय गायिका गुलाब बाई की मोहक आवाज में 'नदी नारे न जाओ, श्याम पइयां पड़ूं...' और 'सैंया रूठ गए...' जैसे दिलकश लोकगीतों को सुनकर लोग इतने आनंद विभोर हो जाते थे कि समय का ध्यान ही नहीं रहता था।

हालांकि, अब उन लोकगीतों, गजलों आदि की जगह पश्चिमी नृत्य और संगीत ने ले ली है, जहां 50 से अधिक नर्तक और नर्तकियां रिकॉर्डेड गानों की धुनों पर अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। बहरहाल, आस्था, लोक संस्कृति और आधुनिकता के रंग में सराबोर विश्व प्रसिद्ध इस पशु मेले में बदलते बिहार की झलक साफ दिखाई देती है। प्रत्येक वर्ष कार्तिक महीने में आरंभ होकर प्रायः एक महीने तक चलने वाले इस प्रसिद्ध मेले का शुभारंभ पिछले 13 नवंबर को बड़े ही धूमधाम से हो चुका है। बता दें कि इस बार 32 दिनों तक चलने वाले इस मेले का समापन 14 दिसंबर को होगा।

हालांकि सोनपुर मेले की शुरुआत कब हुई, इस मामले में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, परंतु इतना तो निश्चित है कि यहां पर उत्तर वैदिक काल से ही यह मेला लगता चला आ रहा है। वैसे कुछ लोगों का यह भी मानना है कि उत्तर वैदिक काल से ही इसकी शुरूआत हुई थी। वहीं, महापंडित डॉ. राहुल सांकृत्यायन ने सोनपुर के पशु मेले का शुंगकाल से ऐतिहासिक संबंधित माना है। देखा जाए तो सोनपुर क्षेत्र के अनेक पुराने मठ-मंदिरों में शुंगकालीन पत्थरों एवं अन्य कई प्रकार के अवशेषों की मौजूदगी डॉ. राहुल सांकृत्यान के इस अभिमत पर मुहर लगाती हुई प्रतीत होती है। इसके बावजूद इस बात की पुष्टि नहीं होती कि सोनपुर क्षेत्र में इस पशु मेले की शुरूआत कब हुई। इसलिए बेहतर यही होगा कि इस मेले से संबद्ध अब तक का जो सबसे पुराना तथ्य मौजूद हो, उसी के अनुसार इसकी शुरूआत का काल मान लिया जाए। जाहिर है कि ऐसे में उत्तर वैदिक काल ही इस मेले की शुरूआत का काल माना जाना चाहिए। वैसे, पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह मेला स्थल 'गजेंद्र मोक्ष स्थल' के रूप में भी जाना जाता है।

सोनपुर मेले का बड़ा ऐतिहासिक महत्व भी रहा है। गौरतलब है कि पुराने समय में इस पशु मेले में मध्य एशिया के देशों से हाथियों और घोड़ों के कारोबारी आया करते थे, क्योंकि वास्तव में यह मेला युद्धों में भाग लेने वाले प्रशिक्षित हाथियों और घोड़ों का संपूर्ण एशिया का सबसे बड़ा केंद्र था। इस मेले के ऐतिहासिक महत्व का अनुमान हमारे धर्मग्रंथों में उल्लेखित इस बात से भी लगाया जा सकता है कि सिख धर्म के गुरु नानक देव जी भी एक बार यहां आए थे। इसके अतिरिक्त बौद्ध साहित्य में भी वर्णन मिलता है कि बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध भी अपनी कुशीनगर की यात्रा के दौरान यहां पधारे थे। इसी प्रकार, मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य एवं 1857 के बहुचर्चित एवं बहुपठित गदर के नायक वीर कुंवर सिंह ने भी सोनपुर मेले से हाथियों की खरीदारी की थी। वहीं, इतिहास की पुस्तकों में इसके भी प्रमाण मौजूद हैं कि मुगल शासक अकबर के प्रधान सेनापति महाराजा मान सिंह ने सोनपुर मेले में आकर मुगल सेना के लिए हाथी एवं अस्त्र-शस्त्र की खरीदारी की थी। सन् 1803 में रॉबर्ट क्लाइव ने सोनपुर के मेला क्षेत्र में घोड़े का बड़ा अस्तबल बनवाया था। बहरहाल, देश भर में 'पशु संरक्षण कानून' लागू रहने के कारण अब मेले में हाथी की बिक्री नहीं की जाती। हालांकि, इस मेले में खरीद-बिक्री के लिए गाय, घोड़े, कुत्ते और बिल्लियां अभी भी लाए जाते हैं।

सोनपुर मेला स्थल पर 'हरि' यानी भगवान श्रीहरि विष्णु और 'हर' यानी भगवान शिव का एक संयुक्त मंदिर स्थित है, जो 'हरिहर नाथ मंदिर' के नाम से देश भर में विख्यात है। एक पौराणिक मान्यता के अनुसार इस स्थल पर 'हरिहर नाथ मंदिर' का निर्माण स्वयं भगवान श्रीराम ने तब किया था, जब वे अपने गुरु महामुनि विश्वामित्र एवं अनुज लक्ष्मण जी के साथ 'सीता स्वयंवर' में भाग लेने के लिए जनकपुर जा रहे थे। वहीं, एक लौकिक मान्यता के अनुसार प्राचीन काल में हिंदू धर्म के दो प्रमुख शैव और वैष्णव संप्रदायों के अनुयाइयों के बीच बड़ा विवाद हुआ, जिससे समाज में संघर्ष और तनाव की स्थिति बन गई। तब, उस समय के प्रबुद्ध लोगों की पहल पर यहां एक सम्मेलन आयोजित कर दोनों संप्रदायों में समझौता कराया गया। उसके बाद सर्वसम्मति से इस स्थल पर संयुक्त रूप से 'हरि' यानी भगवान श्रीहरि विष्णु और 'हर' यानी भगवान शिव की प्रतिमाएं स्थापित कराई गईं। गौरतलब है कि यह हरिहर नाथ मंदिर संभवतः भारत का एकमात्र ऐसा अनोखा मंदिर है, जहां पर एक साथ भगवान श्रीहरि विष्णु और भगवान शिव विराजमान हैं।

पहल

मनोज जानी

लेखक पैरा लीगल वालंटियर हैं।

चलित थाना : ग्रामीण सशक्तिकरण व जन-जागरूकता का उपाय

मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य झाबुआ जिले के पेटलावद थाना क्षेत्र में पुलिस द्वारा चलित थानों की पहल की गई है। यह न केवल अपराध नियंत्रण में सहायक हो सकती है बल्कि सामाजिक जागरूकता और ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में भी मील का पत्थर साबित हो रही है। पेटलावद पुलिस थाने के निरीक्षक दिनेश शर्मा के नेतृत्व में यह पहल न केवल पुलिस और जनता के बीच की खाई को कम कर रही है, बल्कि इसे एक समन्वित और सामुदायिक सहयोग का स्वरूप भी दे रही है।

झाबुआ का आदिवासी समाज, जो मुख्यतः पारंपरिक और साधनहीन जीवनशैली अपनाता है, जो स्वाभाविक रूप से आधुनिक समय में अपराध और तकनीकी धोखाधड़ी जैसे खतरों से अनभिज्ञ है। ऐसे में, चलित थानों के माध्यम से पुलिस न केवल कानूनी सहायता उपलब्ध करवा रही है, बल्कि पेसा एक्ट, महिला अपराधों के विरुद्ध जागरूकता और शांति निवारण समितियों की भूमिका के बारे में जानकारी देकर सामाजिक चेतना का प्रसार भी कर रही है।

जन-जागरूकता अभियान के अंतर्गत ग्रामीणों को उनके अधिकार, कर्तव्य और कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी जा रही है। यह प्रयास न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बना रहा है, बल्कि एक अपराध मुक्त आदर्श गांव के निर्माण की दिशा में भी प्रेरित कर रहा है।

आदिवासी समाज में अक्सर महिलाएं शोषण, घरेलू हिंसा और अन्य अपराधों का शिकार बनती हैं। विशेषकर आदिवासी समाज की प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल असर डालने वाले अपहरण ओर दुष्कर्म के मामलों पर पुलिस द्वारा चलित थानों के माध्यम से इन मुद्दों पर प्रकाश डाला जा रहा है और महिलाओं को उनके अधिकारों की जानकारी दी जा रही है। साथ ही, उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है कि, वे

किसी भी अपराध या अन्याय के खिलाफ पुलिस से संपर्क करें। यह पहल न केवल महिलाओं को सशक्त बना रही है, बल्कि समाज में एक नई चेतना भी जगा रही है। 18 वर्ष उम्र के पूर्व बालिकाओं के विवाह की रोकथाम हो, वे अपना बेहतर भविष्य बना सके।

पेसा एक्ट आदिवासी समाज के स्वशासन और स्वायत्तता को सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कानून है। पुलिस द्वारा इस कानून के प्रावधानों का प्रचार-प्रसार करना आदिवासी समाज को उनके अधिकारों से परिचित करवा रहा है। यह कदम न केवल आदिवासियों को सशक्त बना रहा है, बल्कि उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास भी कर रहा है।

साइबर फ्रॉड से बचाव का तकनीकी प्रशिक्षण- तकनीकी युग में साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। चिंताजनक है यह भी है कि, ग्रामीण आदिवासी समाज इनसे सबसे अधिक प्रभावित होता है। झाबुआ का आदिवासी उच्च पारिश्रमिक के लिए गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों में श्रम हेतु जाते हैं। चलित थानों के माध्यम से पुलिस ग्रामीणों को विशेषकर आदिवासियों को, जो भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन बैंकिंग का भरपूर उपयोग कर रहे हैं, उनको साइबर फ्रॉड से बचने के उपाय बता रही है, जैसे अज्ञात लिंक पर क्लिक न करना, ओटीपी किसी के साथ साझा न करना, यदि सावधानी के बाद में घटना हो जाए तो तुरंत निकटतम थाना, टोल फ्री नंबर 1930, एनसीआरपी पोर्टल, सायबर थाना या अधिकृत वेबसाइट पर शिकायत करने की समझाइश दी। किसी भी प्रकार से भयभीत होने या लालच में आने बचना है। यदि कोई फोन कॉल करने वाला आपकी व्यक्तिगत जानकारी मांगता है तो, कॉल करने वाले कि पुष्टि करना जरूरी है, क्योंकि कोई भी सरकारी विभाग, बैंक, कुरियर कम्पनी, सरकारी संस्था कॉल करके पहचान दस्तावेज देने, कोर्ट का मुकदमा करने की धमकी देकर रुपए की मांग नही कहते, यदि ऐसा कोई कॉल आए तो बिना घबराए तुरंत ही निकटतम पुलिस से संपर्क करना चाहिए। इंस्टा, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि पर आई किसी भी अनजान लिंक को नही खोलना चाहिए, अपने निजी और विभिन्न लेन देन की जानकारी गोपनीय रखना और बैंकिंग विवरण सुरक्षित रखना। यह प्रयास ग्रामीणों को न केवल डिजिटल रूप से सशक्त बना रहा है, बल्कि उन्हें तकनीकी खतरों से बचाने की दिशा में भी प्रभावी सिद्ध हो रहा है।

शांति निवारण समिति: सामुदायिक सहभागिता का आदर्श उदाहरण- शांति निवारण समिति का प्रचार-प्रसार चलित थानों का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस पहल के तहत ग्रामीणों को यह समझाया जा रहा है कि विवादों का समाधान आपसी सहयोग और संवाद से कैसे किया जा सकता है। यह समिति न केवल छोटे मोटे आपसी विवादों को सुलझाने में मदद करती है, बल्कि समाज में शांति और सद्भावना बनाए रखने में भी सहायक है।

अपराध-मुक्त आदर्श गांव का निर्माण-चलित थानों का सबसे बड़ा लक्ष्य अपराध मुक्त आदर्श गांव का निर्माण है। इसके लिए पुलिस और ग्रामीण समाज के बीच संवाद स्थापित किया जा रहा है। यह प्रयास न केवल ग्रामीण समाज को अपराध से दूर रख रही है, बल्कि इसे एक आदर्श समाज के रूप में विकसित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

पुलिस-जनता के बीच विश्वास का सेतु-इस अभिनव पहल ने पुलिस और जनता के बीच की दूरी को काफी हद तक कम कर दिया है। चलित थानों के माध्यम से पुलिस ग्रामीणों के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुन रही है और उन्हें हल करने का प्रयास कर रही है। इससे जनता का पुलिस पर विश्वास बढ़ा है और पुलिस को भी अपनी छवि सुधारने का अवसर मिला है। झाबुआ जिले में चलित थानों की यह पहल समाज सुधार और ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। इसने न केवल अपराध नियंत्रण में मदद की है, बल्कि आदिवासी समाज को जागरूक और सशक्त बनाने में भी अहम भूमिका निभाई है। इस प्रकार की पहल अन्य ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के लिए भी अनुकरणीय है। यदि इस प्रयास को व्यापक स्तर पर लागू किया जाए, तो यह न केवल अपराध मुक्त समाज के निर्माण में सहायक होगा, बल्कि प्रदेश को समृद्ध और सशक्त बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

आमला विधायक ने किया सड़क का भूमिपूजन

518.86 करोड़ से बनेगी 3.32 किमी सड़क

बैतूल। ग्रामीणों को अब अच्छी सड़क की सुविधा मिलेगी। लीलाझर से हीरावाड़ी तक 518.86 लाख की लागत से करीब 3.32 किमी लंबी बनने वाली सड़क का आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने भाजपा नेताओं, अधिकारियों और ग्रामीणों की मौजदूगी में भूमिपूजन किया। उक्त सडक़ निर्माण की मांग ग्रामीण लंबे समय से कर रहे थे। ग्रामीणों की मांग को प्रमुखता से लेते हुए विधायक के प्रयास से आमला ब्लाक लीलाझर से हीरावाड़ी तक करीब 3.32 किमी लंबाई स्वीकृत हुई थी। सड़क निर्माण के बाद ग्रामीणों को कच्चे मार्ग से मुक्ति मिलेगी। दरअसल यह सड़क वर्षो से कच्ची थी। जिससे ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। ग्रामीण गर्मी और सर्दी में जैसे-तैसे इन सडको पर आवागमन कर लेते थे, लेकिन बरसात में यह सडक कीचड़ में तब्दील हो जाती थी। ग्रामीणों ने बताया किमार्ग पर वाहन चलाना तो दूर, पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता था। ऐसे में सडक़ निर्माण के लिए भूमिपूजन होने से ग्रामीणों में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों ने बताया कि पक्की सड़क बनने से न सिर्फ आवागमन की सुविधा मिलेगी, बल्कि किसान अपनी उपज बड़ी अनाज मंडी में भी बेचने जा सकेगे। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा।

498ए जैसे कानूनों का दुरुपयोग पुरुषों को कानूनी और आर्थिक रूप से रहा तोड़

बैतूल। गुड़गांव के एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर ने हाल ही में 24 पन्नों का सुसाइड नोट और 1 घंटे 20 मिनट का वीडियो रिकॉर्ड कर अपनी जान दे दी। इसमें उन्होंने अपनी पत्नी और ससुरालवालों द्वारा की गई प्रताड़ना और झूठे आरोपों का जिक्र किया। उन्होंने अपने सुसाइड नोट में लिखा कि यदि दोषियों को कोर्ट द्वारा निर्दोष करार दिया गया, तो उनकी अस्थियां गटर में बहा दी जाएं। वहीं, इसके विपरीत एक महिला पायलट की आत्महत्या के मामले में बिना सुसाइड नोट के भी उनके परिवार के बयान के आधार पर उनके प्रेमी को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया। एसआईएफ बैतूल के संस्थापक डॉ. संदीप गोहे ने कहा कि 498 जैसे कानूनों का दुरुपयोग पुरुषों को कानूनी और आर्थिक रूप से तोड़ रहा है।।डॉ. गोहे ने बताया कि एसआईएफ बैतूल का उद्देश्य मानसिक तनाव और झूठे आरोपों से जूझ रहे पुरुषों को कानूनी और भावनात्मक मदद प्रदान करना है। उन्होंने सरकार और न्यायपालिका से पुरुषों की आत्महत्या के मामलों को गंभीरता से लेने और झूठे आरोप लगाने वालों पर सख्त कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि यदि आप या आपका कोई जानने वाला मानसिक तनाव या झूठे आरोपों से परेशान है, तो एसआईएफ बैतूल की हेल्पलाइन 8882498498 पर संपर्क करें।

- **गुड़गांव इंजीनियर की दर्दनाक आत्महत्या ने खड़े किए सवाल**
- **498ए का दुरुपयोग, मानसिक तनाव और आत्महत्या के बढ़ते मामले पर एसआईएफ ने जताई चिंता**

कांग्रेस पार्षदों ने किया परिषद की बैठक का बहिष्कार

वार्डों के लिए बजट आवंटन नहीं होने से नाराज

बैतूल। नगरपालिका परिषद की सामान्य सभा की बैठक का कांग्रेस पार्षदों ने बहिष्कार कर दिया। कांग्रेस पार्षद एजेंडे पर चर्चा से पहले सभी वार्डों के लिए आवंटित बजट की सूची पेश करने की मांग कर रहे थे। दरअसल बुधवार को बैठक में 27 बिंदुओं पर चर्चा होना था, लेकिन इस पर पक्ष विपक्ष चर्चा शुरू कर पाता, उससे पहले ही कांग्रेस पार्षद और नेता प्रतिपक्ष राजकुमार दीवान ने खड़े होकर कांग्रेस पार्षदों की बजट आवंटन की जानकारी मांगना शुरू कर दिया। कांग्रेस पार्षदों ने वार्डों में विकास कार्य न होने से अपनी नाराजगी जताते हुए बजट की कॉपी मांगते नजर आए। जब अध्यक्ष और सीएमओ ने एजेंडे के अनुरूप चर्चा किए जाने की बात की, तो कांग्रेसी पार्षद बैठक हाल से बाहर निकल गए। नेता प्रतिपक्ष राजकुमार दीवान ने कहा कि ढाई साल से हम अपने बजट के लिए परेशान है। कांग्रेस के वार्डों में काम नहीं हो पा रहा है। वार्डों के लिए बजट दिया जाए। जानकारी मिलने पर हम बैठक का हिस्सा बनने को तैयार थे, लेकिन कोई रिस्पांस नहीं मिला, इसलिए बहिष्कार करना पड़ा।

इनका कहना है - कांग्रेस पार्षद पहले उनके विषय पर चर्चा करने के लिए कह रहे थे। बजट की सूची बनी हुई है। हम इस पर चर्चा को तैयार थे। लेकिन कांग्रेस पार्षदों का कहना था कि एजेंडे पर बाद में चर्चा हो जो विषय वे बता रहे है उस पर पहले चर्चा हो।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

वरिष्ठ नागरिक संगठन ने किया कंबल वितरण

गांव-गांव जाकर जरूरतमंदों को वितरित कर रहे कंबल

बैतूल। जिले में ठंड लगातार अपना प्रकोप दिखा रही है और तापमान गिरता जा रहा है। जिसके कारण जरूरतमंदों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में वरिष्ठ नागरिक संगठन द्वारा ग्रामीण आदिवासी बाहुल्य ग्राम बडीखुर्द, बहरपुर, इमलीढाना, कटकुई, आमढाना में में 50 कंबलों और 50 कपड़ों का वितरण किया। वरिष्ठ नागरिक संगठन में सभी बुजुर्ग शामिल हैं फिर भी इनकी समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठा देखते ही बनती है। ठंड के मौसम में संगठन द्वारा प्रतिवर्षानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में कंबल वितरण का कार्य का सेवा कार्य निरंतर जारी है।

गैस लीकेज, सिलेंडर भभकने पर हड़बड़ाहट में उठा लेते हैं गलत कदम

गैस एजेंसियां उपभोक्ताओं को जागरूक करने नहीं लगाती शिविर

संजय द्विवेदी, बैतूल। मुलताई क्षेत्र में कुछ ही समय पहले गैस सिलेंडर के भभकने और गैस लीकेज से आगजनी की दो घटनाएं हो चुकी है, लेकिन ऐसी घटनाओं के वक्त क्या करना चाहिए, कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिए, इस संबंध में उपभोक्ताओं को ज्यादा कुछ जानकारी नहीं रहती है। जिसके पीछे कारण है कि गैस एजेंसियां उपभोक्ताओं को ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए जागरूक नहीं करती है। गैस एजेंसियां उपभोक्ताओं को सिर्फ होम डिलेवरी जैसी ही सुविधाएं देती है, इसके अलावा गैस से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान उपभोक्ताओं को स्वयं ही करना पड़ता है। जबकि नियमानुसार गैस कनेक्शन देते वक्त भी गैस एजेंसी के कर्मचारियों को चूल्हे, पाइप, रेग्यूलेटर सहित गैस टंकी को रखने के स्थान की रूटिंग चेकिंग करना चाहिए। जिसके लिए उपभोक्ताओं से दूरी के हिसाब एजेंसियां शुल्क ले सकती है, लेकिन गैस एजेंसियां इन सब बातों को दरकिनार कर लोगों की सुरक्षा

की अनदेखी कर रही है। इधर अधिकारी भी ज्यादा दिलचस्पी नहीं लेते है। जिससे भविष्य में किसी के साथ भी कोई बड़ा हादसा भी हो सकता है।

कर्मचारी नहीं करते रूटिंग चेकिंग - गैस कनेक्शन की कम से कम तीन माह में रूटिंग चेकिंग होनी चाहिए। खासकर गैस चूल्हा और बर्नर सहित पाइप और रेग्यूलेटर से गैस लीकेज तो नहीं, इसकी जांच के लिए हर एजेंसी को अलग से कर्मचारी रखने होते है। ऐसे कर्मचारी जो पूर्ण रूप से प्रशिक्षित हो और उपभोक्ताओं को सावधानियां एवं रूटिंग चेकिंग से होने वाले फायदे के बारे में विस्तार से जानकारी उपलब्ध करा सके। इसके अलावा नया गैस कनेक्शन देते वक्त रखरखाव और सिलेंडर रखने की जगह का निरीक्षण किए जाने का नियम है ताकि भविष्य में कभी हादसा न हो सके। लेकिन गैस एजेंसियों द्वारा इसकी जांच नहीं की जाती। केवल कागजी कार्रवाही पूर्ण कर उपभोक्ताओं को गैस सिलेंडर और चूल्हा, रेग्यूलेटर सहित अन्य सामान प्रदान कर दिया जाता है।

उपभोक्ताओं को नहीं किया जाता जागरूक - गैस एजेंसियों द्वारा उपभोक्ताओं को शिविर लगाकर जागरूक भी नहीं किया जाता है। जिसमें प्रमुख रूप से सिलेंडर भभकने और आग लगने या गैस लीकेज होने पर उपभोक्ताओं को कौन-कौन से सावधानियां रखनी चाहिए इसकी विस्तार से जानकारी उपभोक्ताओं को नहीं रहती है। एजेंसयों से उपभोक्ताओं को केवल होम सर्विस के अलावा कोई सुविधा नहीं दी जाती। इसमें भी बड़े पैमाने पर गड़बड़ी होती है। होम डिलेवरी के दौरान एजेंसी कर्मचारी सिलेंडर का तौलकर भी नहीं देते है और न ही सिलेंडर चेक किया जाता है। यह लापरवाही लोगों की जान पर भारी पड़ सकती है। यहां तक कि सिलेंडर भी लेने के लिए ग्राहको को गाड़ी तक जाना पड़ता है।

उपभोक्ताओं को मिलनी चाहिए यह सुविधाएं

(1) प्रति माह या कम से कम तीन माह में गैस कनेक्शन की रूटिंग चेकिंग।
(2) सिलेंडर और चूल्हे की जांच तथा रखने के स्थान का निरीक्षण।
(3) शिविर लगाकर गैस उपभोक्ताओं को आग लगने पर सावधानियों की जानकारी।
(4) सिलेंडर को तौलकर एवं चेक करके उपभोक्ताओं को सौंपना।
(5) गैस एजेंसी की सर्विस से उपभोक्ताओं की संतुष्टि के बारे में जानकारी लेना।

इनका कहना है - गैस एजेंसियों को शिविर लगाकर गैस उपभोक्ताओं को जागरूक करने के लिए कहा जायेगा। रूटिंग चेकिंग के लिए एजेंसियां कर्मचारियों को भेजती है। उपभोक्ताओं को भी सिलेंडर तौलकर और चेक करके ही लेना चाहिए। यदि एजेंसी कर्मचारी ऐसा नहीं करते है तो इसके लिए भी एजेंसियों को बोला जायेगा।

- कृष्णा कुमार टेकाम, जिला खाद अधिकारी, बैतूल

आज बैतूल आएंगे स्वामी परमार्थदेव

कल से आयोजित होगा पतंजलि का योग-आरोग्य शिविर

बैतूल। आगामी शुक्रवार से बैतूल के स्टेडियम में होने वाले योग शिविर के लिए पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से स्वामी परमार्थदेव आज गुरुवार को बैतूल आएंगे। गौरतलब है कि इन दिनों चारों ओर योग की लहर है क्योंकि आगामी 13,14, 15 दिसंबर को योगऋषि स्वामी रामदेव के परम शिष्य और पतंजलि योग समिति के केंद्रीय प्रभारी डॉ. स्वामी परमार्थ देव के मार्गदर्शन में योग-आरोग्य शिविर के प्रचार- प्रसार के लिए योग साधक घर- घर तक पहुंच रहे हैं। लोगों से इस शिविर का लाभ उठाने का आह्वान कर रहे हैं। जहां आयोजन समिति के सदस्य शहर में होने वाले विभिन्न योग कक्षाओं में जाकर योग साधकों को इस महाकुंभ में शामिल होने की अपील कर रहे हैं वही घर-घर जाकर भी आमंत्रण दिए जा रहे हैं। साथ ही व्हाट्सएप के माध्यम से भी लोगों को जोड़कर शिविर में आने का आह्वान किया जा रहा है। वाहन रैली निकाल कर भी लोगों के बीच योग आरोग्य को लेकर जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। प्रतिदिन ओपन ऑडिटोरियम में सुबह 5.30 से ही योग साधकों का मेला सा लग जाता है। पिछले लगभग 10 वर्षों से पतंजलि युवा भारत प्रभारी हितेश पटेल के मार्गदर्शन में संचालित इस योग कक्षा में पहले केवल पुरुष योग साधक ही शामिल होते थे लेकिन आयोजन समिति के आह्वान पर बड़ी संख्या में महिलाएं भी आकर पूरी तन्मयता से योग का लाभ उठा रही है। धीरे-धीरे पूरे शहर में योग शिविर को लेकर खासा उत्साह नजर आ रहा है।

भारत स्वाभिमान के अध्यक्ष सुनील कुबड़े और आयोजन समिति के अध्यक्ष सुनील द्विवेदी ने बताया कि अब तक लगभग 5 हजार से अधिक लोगों ने योग के लिए पंजीयन कराया है। आयोजन बड़ा होता जा रहा है इसलिए इसकी तैयारियों को ध्यान में रखते हुए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल और नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर के साथ आयोजन समिति के सदस्यों ने विजय सेवा न्यास भवन सोमवार को बैठक का आयोजन किया। बैठक में विधायक एवं नपा अध्यक्ष ने शिविर के लिए आवश्यक सभी व्यवस्थाओं में सहयोग का आश्वासन दिया है। मंगलवार की सर्द भरी सुबह में भी लगभग दो सौ योग साधकों ने ऑडिटोरियम में योग किया। इस योग सत्र में विधायक खंडेलवाल नपा उपाध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, विकास वार्ड के पार्षद आनंद प्रजापति उपस्थित रहे। विधायक ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि इस योग कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जिले के 15 विभिन्न गांव में बड़ी स्क्रीन पर किया जाएगा। जिससे जो लोग बैतूल नहीं आ सकते वे अपनी अपनी जगह पर रहकर भी इस योग शिविर का लाभ उठा सके। उनके भाषण का सीधा प्रसारण भी आज ट्रायल के तौर पर सभी 15 गांव में किया गया। विधायक एवं नपा अध्यक्ष ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित करने का आश्वासन दिया। पहले जहां यह कार्यक्रम पतंजलि योग संस्थान का था अब इसमें विजय सेवा न्यास बैतूल, नित्या सेवा समिति, गायत्री परिवार और ओम आयुर्वेदिक महाविद्यालय भी शामिल होकर सेवा कार्य में सहभागी बन रहे हैं। युवा भारत प्रभारी हितेश पटेल, पतंजलि किसान सेवा समिति के नवनीत वर्मा, पतंजलि योग समिति के विमल दुबे और संगठन मंत्री विनोद परिहार के अलावा समाजसेवी संजय शुक्ला पप्पी, बलराम जसूजा, रंजीत शिवहरे, हरीश गढ़ेकर, दीपक पाल ने सभी सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त करते हुए ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस शिविर में शामिल होकर योग आरोग्य का लाभ उठाने का आह्वान किया है।

गीता का उपदेश जीवन का मार्गदर्शन है : ठाकुर

- **गीता जयंती पर सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन**
- **विद्यार्थियों ने नृत्य, झांकियों और श्लोकों की दी प्रस्तुति**

बैतूल। गीता जयंती के अवसर पर माइन्ड्स आई इंटरनेशनल स्कूल परिसर में श्री अग्रसेन महाराज ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स द्वारा भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विक्रमादित्य सिंह ठाकुर (डायरेक्टर आदिम जाति कल्याण विभाग, मप्र शासन), राजू सोनारे और पंडित संतोष दुबे का स्वागत श्रीफल, शॉल और भगवत गीता भेंटकर किया गया। विक्रमादित्य सिंह ठाकुर ने अपने वक्तव्य में गीता के उपदेशों के महत्व और धर्म की परिभाषा पर प्रकाश डाला। पंडित संतोष दुबे ने शिक्षकों को गीता के माध्यम से छात्रों को संस्कार देने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में श्री अग्रसेन महाराज विद्यालय गंज के विद्यार्थियों ने योग प्रदर्शन कर स्वस्थ जीवन का संदेश दिया। वहीं विनोबा नगर के विद्यार्थियों ने गीता श्लोक और झांकियों के माध्यम से जीवन जीने की कला को प्रस्तुत किया। माइन्ड्स आई इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने नृत्य के जरिए गीता के सार का मनमोहक प्रदर्शन किया। सभी प्रस्तुतियों की सराहना संस्थान के डायरेक्टर डॉ. ओ. पी. राठौर और सचिव डॉ. रिशांक राठौर ने की। कार्यक्रम के अंत में श्री अग्रसेन महाराज ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स के संचालक अनिल राठौर ने आभार व्यक्त करते हुए गीता के उपदेशों को अपने जीवन में अपनाने और योग से जुड़ने की अपील की। इस कार्यक्रम का आयोजन योग गुरु रोशनलाल मोखड़े के मार्गदर्शन में किया गया।

महाविद्यालय में गीता महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

बैतूल/शाहपुर। शासकीय महाविद्यालय शाहपुर में बुधवार को गीता जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के छायाचित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन कर किया गया। उसके पश्चात गीता ग्रन्थ के ज्ञान व सन्देश पर आधारित वीडियोज के माध्यम से जीवन में प्रेरणा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया गया व निष्काम कर्म की शिक्षा प्रदान की गई। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सचिन कुमार नागले ने कहा कि निष्काम कर्म गीता का सार है व प्रत्येक विद्यार्थी को निष्काम कर्म के पथ पर आगे बढक़र विकास करना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ प्रभारी श्रीमती नीतू जायसवाल माहोरे ने कहा कि गीता राष्ट्रीय ग्रंथ है जो संपूर्ण विश्व के नागरिक को अपने कर्तव्य की दिशा का बोध कराता है तथा जीवन जीने का उद्देश्य प्रदान करता है। कार्यक्रम का संचालन सीके वाघमारे तथा आभार प्रदर्शन डॉ सुभाष वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर समस्त महाविद्यालय स्टाफ एवं लगभग 96 विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

गीता जयंती के इस आयोजन ने गीता के उपदेशों के प्रति जागरूक किया और जीवन में उन्हें अपनाने की प्रेरणा दी।

विवेकानंद वार्ड में होगा सार्वजनिक शौचालय निर्माण कार्य

बैतूल। बैतूल के विवेकानंद वार्ड में फिल्टर प्लांट चौराहे के पास 3 लाख 22 हजार 683 रूपए की प्रशासकीय स्वीकृति से सार्वजनिक शौचालय का निर्माण कार्य किया जाएगा। जारी आदेश के अनुसार सार्वजनिक शौचालय निर्माण कार्य में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल की स्वेच्छानुदान निधि 2 लाख रूपए तथा नगर पालिका द्वारा 1 लाख 22 हजार 683 रूपए की राशि वहन की जाएगी। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने निर्माण एजेंसी नगर पालिका परिषद बैतूल को योजना के तहत निर्धारित समय सीमा में गुणवत्तापूर्वक रूप से कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए है।

विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रगति के लिये बनाई जा रही अपार आईडी

एक करोड़ 45 लाख तैयार की जायेंगी अपार आईडी

बैतूल। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रगति को ट्रेक करने के लिये ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री अपार आईडी बनाने के निर्देश दिए है। अपार आईडी को वन नेशन-वन स्टूडेंट आईडी के नाम से भी जाना जाता है। प्रदेश में एक करोड़ 45 लाख बच्चों के अपार आईडी तैयार किये जाएंगे। स्कूल शिक्षा विभाग ने शासकीय और अशासकीय स्कूलों में अपार आईडी बनाने के लिये जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिये है। इस काम तेज गति लाने के लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अपार आईडी से शिक्षा ग्रहण करने की कागजी प्रक्रियाओं में होने वाली समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि कोई छात्र स्कूल बदलता है चाहे राज्य के भीतर उसका सारा डेटा अपार आईडी के द्वारा नये स्कूल में स्थानांतरित हो जायेगा।

अल्पविराम स्वयं से साक्षात्कार का अवसर देता है : अभिषेक

- **शासकीय विभागों के कर्मचारियों को कराया गया,जीवन में आनंद की अनुभूति**
- **जनपद पंचायत भीमपुर में सम्पन्न हुई आनंद की अल्प विराम कार्यशाला**

बैतूल। राज्य आनंद संस्थान मध्यप्रदेश द्वारा बैतूल जिले के भीमपुर विकासखण्ड में 11 दिसम्बर को एक दिवसीय अल्प विराम परिचय कार्यशाला का आयोजन जनपद पंचायत के सभाग्रह में आयोजित किया गया। जिला सम्पर्क व्यक्ति महेश गुंजेले ने बताया कि राज्य आनंद संस्थान द्वारा बैतूल जिले के प्रत्येक विकासखण्ड में अल्प विराम कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एक दिवसीय अल्प विराम परिचय कार्यशाला का आयोजन भीमपुर जनपद के सभाग्रह में आयोजित किया गया। सत्र का आरंभ दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथि मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक वर्मा एवं आनंद संस्थान के मास्टर ट्रेनर तुलिका पचौरी, रेखा कापसे,आनंद सहयोगी आशीष पचौरी, आशीष कोकने,जिला सम्पर्क व्यक्ति महेश गुंजेले एवं प्रतिभागियों द्वारा सरस्वती वदंना से हुई। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक वर्मा ने कहा कि अल्पविराम स्वयं से साक्षात्कार का अवसर देता हैं। आनंद विभाग द्वारा संचालित अल्पविराम कार्यक्रम एक ऐसा प्रयास हैं जो व्यक्ति को स्वयं से जुड़ने,अपने भीतर झांकने और आत्ममंथन करने का अवसर देता हैं। परिचय सत्र में महेश गुंजेले द्वारा आनंद की ओर विषय पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों की शेयरिंग ली तथा वीडियों के माध्यम से आनंद संस्थान की गतिविधियों से परिचय कराया गया। प्रथम सत्र में मास्टर ट्रेनर तुलिका पचौरी ने हमारे रिश्ते सत्र में विभिन्न रिश्तों पर बात करते हुए आनंद की अनुभूति और जीवन को सकारात्मक सोच की ओर ले जाने वाली विविध गतिविधियां और सत्रों में शान्त समय लेकर आत्मानुभूति करवाई। मास्टर ट्रेनर रेखा कापसे द्वारा जीवन का लेखा-जोखा विषय पर चर्चा कि इसमें बचपन से लेकर अब तक मेरी मदद किस-किस ने की है ? 'बचपन से लेकर अब तक मैंने किस-किस की निःस्वार्थ मदद की ? 'बचपन से लेकर अब तक मुझे किस-किस ने दुःख दिया ? बचपन से लेकर अब तक मैंने किस-किस को दुःख दिया ? इन सत्र में आनंदक आशीष कोकने द्वारा अपनी शेयरिंग ली। आनंद सहयोगी आशीष पचौरी द्वारा 'फ्रीडम ग्लास पर चर्चा करते हुए स्वंय के अन्दर लोभ, क्रोध, लालच, ईर्ष्या,आदि पर अपनी स्वय कि शेयरिंग दी तथा प्रतिभागियों से चर्चा की। इस कार्यशाला में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, शिक्षा विभाग, महिला बाल विकास विभाग, कृषि विभाग के 55 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया तथा आनंद विभाग से निरंतर जुड़ कर स्वयं से स्वयं की मुलाकात तथा अपने अंतर्मन की आवाज को सुनकर, स्वयं को पहचानने के साथ दूसरों की मदद करने की इच्छा व्यक्त की है।

श्री राजेंद्र सुरी शा. महा. सरदारपुर - राजगढ़ में गीता जयंती के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन

धार। श्री राजेंद्र सुरी शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर - राजगढ़ में गीता जयंती के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन शासन के आदेशानुसार प्रभारी प्राचार्य प्रो.एल .एस अलावा की अध्यक्षता एवं भारतीय ज्ञान परम्परा नोडल अधिकारी प्रो.सरिता जैन के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। प्राचार्य प्रो अलावा ने विद्यार्थियों को गीता जयंती पर शुभकामनाएं दी तथा भारतीय संस्कृति के अनुसार कार्य करने पर जोर दिया। प्रो.सरिता जैन ने गीता जी के विशेष पहलुओं से विद्यार्थियों का परिचय करवाया तथा गीता जी के नियमित अध्ययन पर जोर दिया प्रो.आर .के जैन ने भारतीय संस्कृति के बारे में जानकारी दी। डॉ मोहित सिंह चौहान ने गीता जी के श्लोक एवं तेरहवें अध्याय का पाठन किया तथा विभिन्न जानकारियां दी। अंत में कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों और स्टाफ के द्वारा गीता जी की आरती की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ मोहित सिंह चौहान ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ डी.एस.मुजाल्दा ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं महाविद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने बुधवार को नई दिल्ली में पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जी से सौजन्य भेंट की।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में 'फिट इंडिया वीक - 2024' का सफल आयोजन

भोपाल। भारतीय खेल प्राधिकरण केंद्रीय केंद्र (मध्य क्षेत्र), भोपाल की SAI संस्था द्वारा फिट इंडिया वीक – 2024 समारोह का आयोजन कार्यालय मंडल रेल प्रबंधक भोपाल के कार्मिक विभाग प्रांगण में भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान साहसिक गतिविधियों, खेल आयोजनों, संपूर्ण आहार के महत्व, स्वस्थ जीवनशैली और कार्यस्थल पर योग एवं व्यायाम की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कर्मचारियों ने इन गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री योगेन्द्र बघेल ने अपने संबोधन में कहा, 'फिट इंडिया वीक' जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने और उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए प्रेरित करना है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया ने बताया, इस प्रकार के आयोजन कर्मचारियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्वस्थ कार्य वातावरण तैयार करने में भी मददगार होते हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री विजय सिंह, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण) श्री एम. एस. यादव और मंडल कार्यालय के सभी कर्मचारी मौजूद रहे। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और भविष्य में ऐसे आयोजन जारी रखने के संकल्प के साथ किया।

भोपाल मंडल को टिकट चेकिंग से माह नवम्बर 2024 में रुपये 3.23 करोड़ की कमाई हुई

भोपाल। वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया के निर्देशन व मार्गदर्शन में भोपाल मण्डल पर माह नवम्बर 2024 में नियमित की गई टिकट जांच के दौरान टिकट चेकिंग स्टाफ द्वारा बिना टिकट/अनुचित टिकट एवं बिना बुक कराए सामान लेकर यात्रा करने वाले यात्रियों की सघन जांच की गई। माह नवम्बर 2024 में की गई टिकट जाँच के दौरान बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों के 25,163 मामले पकड़े गए, जिनसे किराया एवं बतौर जुर्माना सहित रुपये 1,80,49,310/- वसूल किया गया। अनियमित टिकट यात्रियों के 28,509 मामले पकड़े गए, जिनसे किराया एवं बतौर जुर्माना सहित रुपये 1,42,50,490/- वसूल किया गया । इसी प्रकार बिना बुक कराए सामान के साथ यात्रा करने के 135 मामले पकड़े गए, जिनसे रुपये 31,020/- वसूला गया। इस प्रकार दिनांक 01 नवम्बर से 30 नवम्बर 2024 तक की गई टिकट जांच के दौरान बिना टिकट/अनियमित टिकट एवं बिना बुक कराए समान लेकर यात्रा करने के पकड़े गए कुल 53,807 मामले से रेलवे को रुपये 3,23,30,820/- राजस्व की प्राप्ति हुई। यात्रियों से अनुरोध है कि उचित टिकट लेकर ही यात्रा करें, प्रतिक्षा सूची ई-टिकट पर यात्रा करने की अनुमति नहीं है। इसी प्रकार प्लेटफॉर्म टिकट भी यात्रा के लिए अनुमत नहीं है। अतः प्रतीक्षा सूची ई-टिकट अथवा प्लेटफॉर्म टिकट लेकर यात्रा न करें। स्टेशन प्लेटफॉर्म पर प्रवेश के लिए यात्रा टिकट या प्लेटफॉर्म टिकट होना आवश्यक है। यात्रा से पूर्व अपने सामान को बुक कराएं, ताकि यात्रा के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो।

एम्स में मालदीव के न्यायाधीशों के लिए फोरेंसिक मेडिसिन प्रशिक्षण कार्यक्रम

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान ने राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी द्वारा आयोजित एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम के तहत मालदीव के माननीय न्यायाधीशों को एम्स भोपाल के फॉरेंसिक मेडिसिन विभाग द्वारा किए जा रहे अग्रणी कार्यों के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। फॉरेंसिक मेडिसिन और टॉक्सिकोलॉजी विभाग की प्रोफेसर डॉ. जयंती यादव और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. निरंजन साहू ने विभाग की कार्यप्रणाली और उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। माननीय न्यायाधीशों ने न्याय चिकित्सा के क्षेत्र में विभाग की उत्कृष्टता और योगदान की सराहना की। इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए, प्रो. सिंह ने कहा- यह कार्यक्रम एम्स भोपाल की फॉरेंसिक मेडिसिन में विशेषज्ञता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मालदीव के न्यायाधीशों को प्रशिक्षण देना भारत और मालदीव के बीच ज्ञान और कौशल के आदान-प्रदान में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न्याय और फॉरेंसिक चिकित्सा के क्षेत्र में मजबूत सहयोग की नींव रखेगा। इस दौरे पर आए प्रतिनिधिमंडल ने एम्स भोपाल की प्रमुख सुविधाओं जैसे मर्चुरी, फॉरेंसिक रेडियोलॉजी यूनिट, पोस्टमार्टम माइक्रोबायोलॉजी, फॉरेंसिक हिस्टोपैथोलॉजी और फॉरेंसिक टॉक्सिकोलॉजी लैब का दौरा किया। उन्हें इन इकाइयों के संचालन और योगदान के व्यावहारिक दृष्टिकोण से अवगत कराया गया। उत्तराखंड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और फोरेंसिक मेडिसिन एवं टॉक्सिकोलॉजी विभाग के अतिरिक्त प्रोफेसर डॉ. अतुल एस. केचे की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की गरिमा को और भी बढ़ाया। विभाग के रेजिडेंट डॉक्टरों ने मालदीव के न्यायाधीशों को एम्स भोपाल में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी।

पीएम श्री एयर एम्बुलेंस से महिला को समय पर हायर सेंटर रेफर कर बचाई जान

आयुष्मान भारत योजना और पीएम श्री एयर एम्बुलेंस योजना ने किया जीवन को संरक्षित

● नि:शुल्क प्राप्त हुई सेवाएं

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार के प्रयासों और आयुष्मान भारत योजना के तहत गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने का अभियान निरंतर जारी है। मंगलवार को छतरपुर निवासी श्रीमती राजकुमारी गुप्ता (52 वर्ष) को पीएमश्री एयर एम्बुलेंस के माध्यम से समय पर हायर सेंटर रेफर कर उनकी जान बचाई गई। आयुष्मान योजना हितग्राही श्रीमती गुप्ता को उपचार और एयर एम्बुलेंस की सुविधा नि:शुल्क प्राप्त हुई। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि प्रदेश के हर नागरिक को समय पर और उच्च गुणवत्ता की स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हों। यह सेवा उस संकल्प को साकार करती है, जिसमें जरूरतमंदों को हरसंभव मदद प्रदान कर उन्हें स्वस्थ जीवन का अधिकार दिलाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि श्रीमती राजकुमारी गुप्ता को पेट दर्द और रक्तचाप कम होने की शिकायत पर 10 दिसंबर को जिला अस्पताल छतरपुर में भर्ती कराया गया था। जाँच के दौरान चिकित्सकों ने पाया कि उनके बाएं गुर्दे में एक बड़ी चोट और आंतरिक रक्तस्राव हो रहा है। जिला अस्पताल के सर्जन और विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्हें तत्काल भोपाल रेफर करने का निर्णय लिया। आयुष्मान कार्ड धारक होने के कारण मरीज को चिरायु मेडिकल कॉलेज, भोपाल में निःशुल्क उपचार के लिए रेफर किया गया। मरीज को जिला अस्पताल की टीम के सहयोग से खजुराहो एयरपोर्ट तक एम्बुलेंस से पहुँचाया गया और वहां से एयर एम्बुलेंस के जरिये भोपाल भेजा गया। चिरायु मेडिकल कॉलेज में पहुंचने पर मरीज का ब्लड टेस्ट, अल्ट्रासाउंड,

सीटी स्कैन और डीएसए (डिजिटल सब्ट्रैक्शन एंजियोग्राफी) जैसी एडवांस जांचें की गईं। जांच में पाया गया कि मरीज के बाएं गुर्दे में 11×7 सेमी का बड़ा और फटा हुआ एंजियोमायोलिपोमा (रक्त वाहिकाओं और वसा का ट्यूमर) है, जिससे लगातार रक्तस्राव हो रहा था।

3 घंटे के भीतर की गई जटिल सर्जरी

मरीज की स्थिति को देखते हुए चिकित्सकों की टीम ने तत्काल एम्बोलाइजेशन और रक्तस्राव रोकने के लिए कॉइलिंग प्रक्रिया करने का निर्णय लिया। यह जटिल प्रक्रिया इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. अदनान खान और उनकी टीम ने सफलता पूर्वक 3 घंटे के भीतर पूरी की। इस जीवनरक्षक प्रक्रिया के कारण मरीज की जान बचाई जा सकी। उल्लेखनीय है कि आयुष्मान योजना में शामिल नई चिकित्सकीय प्रक्रियाओं यह प्रक्रिया हाल ही में शामिल की गयी है। योजनान्तर्गत पहले कुल 1670 प्रकार के उपचार उपलब्ध थे इसका विस्तार करते हुए नया हेल्थ बेनिफिट पैकेज एचबीपी-2022 लागू किया गया है, जिसमें 282 प्रकार के नए उपचार शामिल किये गए है। अब 1952 प्रकार के उपचार आयुष्मान योजनान्तर्गत उपलब्ध हैं। नए पैकेज में गंभीर बिमारियों जैसे की अंग प्रत्यारोपण, बोनमैरो ट्रांसप्लांट एवं कैंसर की जांच एवं उपचार हेतु हाई एंड इन्वेस्टीगेशन सहित कई अत्याधुनिक चिकित्सकीय सेवाओं को शामिल किया गया है।

ब्राडबैंड सेवा के लिए तैयार है पन्ना, कटनी, छतरपुर जिलों की अधिकांश पंचायतें : शर्मा

● भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा द्वारा लोकसभा में पूछे गये प्रश्न के जवाब में लोकसभा में दी गई जानकारी

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा द्वारा लोकसभा में पूछे गए प्रश्न के जवाब में जानकारी दि गई है कि प्रदेश की ग्राम पंचायतों को भारतनेट परियोजना के अंतर्गत ब्राडबैंड से कनेक्ट किया जा रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत पन्ना, कटनी और छतरपुर जिलों की अधिकांश ग्राम पंचायतों को ब्राडबैंड से कनेक्ट किया जा चुका है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि अक्टूबर, 2024 तक मध्यप्रदेश की 17,850 ग्राम पंचायतों को ब्राडबैंड से जोड़ा जा चुका है। पन्ना जिले की 395 ग्राम पंचायतों में से 390 को, कटनी जिले की 407 ग्राम पंचायतों में से 115 को एवं छतरपुर जिले की 558 ग्राम पंचायतों में से 225 को ब्राडबैंड सेवा से जोड़ा जा चुका है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने लोकसभा में दी गई इस जानकारी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हर गांव और हर व्यक्ति को विकास और जनकल्याण की योजनाओं से जोड़ना चाहते हैं। इस काम में ग्राम पंचायतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसीलिए प्रधानमंत्री जी चाहते हैं कि देश की हर ग्राम पंचायत सुशासन और विकास की इकाई के रूप में काम करे। ग्राम पंचायतों को सक्षम बनाने के लिए ही भारतनेट परियोजना शुरू की गई है, जिसका काम तेजी से आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस महाराजा भोज पीजी कालेज धार में गीता जयंती महोत्सव , जिला स्तरीय पोस्टर प्रतियोगिता

धार। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धार में बुधवार को भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ द्वारा अंर्तराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव के अंतर्गत गीता जयंती मनाई गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एस एस बघेल ने विद्यार्थियों को गीता के सार का महत्व बताया। मुख्य अतिथि के रूप में आदिम जाति विभाग से मंडल संयोजक मोनिका चौहान ने भी विद्यार्थियों को गीता पाठ दैनिक जीवन में सतत पढ़ने के लिए प्रेरित किया। प्रशासनिक अधिकारी डॉ गजेंद्र उज्जैनकर ने गीता जयंती मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। डॉ के एस चौहान ने गीता के श्लोकों का वचन किया। अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के अंतर्गत जिला स्तरीय पोस्टर प्रतियोगिता ''भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत चित्रकला के विभिन्न आयाम'' विषय पर आयोजित की गई। इसमें शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर, धार, बदनावर, कुक्षी, धामनोद, मनावर व विधि महाविद्यालय धार ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

नीति आयोग की नेशनल कॉन्फ्रेंस का संचालन का दायित्व कलेक्टर प्रियंक मिश्रा निभायेंगे

धार। नीति आयोग (NITI Aayog) की दिल्ली में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस के संचालन की महती जिम्मेदारी धार कलेक्टर प्रियंक मिश्रा को दी गई है। ज्ञात रहे कि यह कॉन्फ्रेंस राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों और अन्य उच्च अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए आयोजित की जाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित समूचे देश के मुख्य सचिवों,अन्य उच्च अधिकारियों और विषय विशेषज्ञों की कॉन्फ्रेंस में मौजूदगी रहेगी। चार दिवसीय इस कॉन्फ्रेंस में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिव अपनी सरकारों का प्रतिनिधित्व करेंगे और अपने-अपने क्षेत्रों की प्राथमिकताओं और योजनाओं को साझा करेंगे। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ, नीति आयोग द्वारा आमंत्रित, सत्रों में सुझाव और परामर्श प्रदान करेंगे। राज्य शासन द्वारा कलेक्टर श्री मिश्रा की प्रवास अवधि तक के लिए धार कलेक्टर का प्रभार जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी को सौपा गया है।

एम्स भोपाल के फिजियोलॉजी विभाग की टीम ने

ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज चेन्नई में आयोजित ऐपिकॉन 2024 में लिया भाग

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में, संस्थान ने शोध और चिकित्सा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। इस संदर्भ में, फिजियोलॉजी विभाग ने 10 दिसंबर 2024 को ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज, चेन्नई द्वारा आयोजित एसोसिएशन ऑफ फिजियोलॉजिस्ट एंड फार्माकोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया (ऐपिकॉन) 2024 में 'होलिस्टिक हेल्थकेयर विद एन इंटीग्रेटिव एप्रोच' विषय पर प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में देशभर के प्रमुख चिकित्सा विशेषज्ञों ने भाग लिया और समग्र व फिजियोलॉजिकल चिकित्सा में नवीनतम रणनीतियों पर चर्चा की, जो भविष्य में समग्र रोगी देखभाल के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। प्रो. सिंह ने इस कार्यक्रम के महत्व पर टिप्पणी करते हुए कहा, यह कार्यक्रम पुरानी बीमारियों के इलाज और और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में इंटीग्रेटिव मेडिसिन के बढ़ते महत्व को दर्शाता है। यह आवश्यक है कि हम आधुनिक चिकित्सा को पारंपरिक प्रथाओं के साथ जोड़कर एक स्थायी स्वास्थ्य देखभाल मॉडल तैयार करें। एम्स भोपाल की फिजियोलॉजी विभाग की प्रोफेसर, डॉ. रचना पराशर ने देश के विभिन्न हिस्सों में लागू सफल इंटीग्रेटिव हेल्थकेयर मॉडल्स को प्रस्तुत किया और एम्स भोपाल के इंटीग्रेटिव मेडिसिन क्लिनिक की सफलता साझा की, जिसने जनवरी 2023 में उद्घाटन के बाद से 2,500 से अधिक रोगियों को सेवाएं प्रदान की हैं। डॉ. रागिनी श्रीवास्तव, फिजियोलॉजी विभाग की अतिरिक्त प्रोफेसर, ने पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में इंटीग्रेटिव दृष्टिकोण की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने योग प्रथाओं जैसे कुंजल क्रिया, जीवनशैली संशोधन और कटि स्नान चिकित्सा की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला, जो पीसीओएस के प्रबंधन में एक प्रभावी विकल्प प्रदान करती है। फिजियोलॉजी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रेखा जिवाने ने 'गेरियाट्रिक मरीजों में मसल्स की स्थिति और जीवनशैली में बदलाव का प्रभाव' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने सरकोपीनिया–मांसपेशियों के पतन, शक्ति में कमी और धीमी पुनर्प्राप्ति–के मुद्दों को संबोधित किया और इसके रोकथाम में व्यायाम के महत्व पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, आयुष विभाग की योग चिकित्सा अधिकारी, डॉ. मुद्दा सोफिया ने एक योग सत्र का संचालन किया। उन्होंने पुरानी बीमारियों की रोकथाम और प्रबंधन में योग को एक गैर-औषधीय हस्तक्षेप के रूप में अपनाने पर जोर दिया। इस कार्यशाला ने व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार जीवनशैली में बदलाव को प्रोत्साहित करने और योग, प्राकृतिक चिकित्सा, व्यायाम, और पोषण जैसे बहुविषयी दृष्टिकोणों को विकसित करने के महत्व पर बल दिया ताकि समग्र रोगी देखभाल प्रदान किया जा सके।

एम्स भोपाल के फिजियोलॉजी विभाग की टीम ने

ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज चेन्नई में आयोजित ऐपिकॉन 2024 में लिया भाग

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में, संस्थान ने शोध और चिकित्सा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। इस संदर्भ में, फिजियोलॉजी विभाग ने 10 दिसंबर 2024 को ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज, चेन्नई द्वारा आयोजित एसोसिएशन ऑफ फिजियोलॉजिस्ट एंड फार्माकोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया(ऐपिकॉन) 2024 में 'होलिस्टिक हेल्थकेयर विद एन इंटीग्रेटिव एप्रोच' विषय पर प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में देशभर के प्रमुख चिकित्सा विशेषज्ञों ने भाग लिया और समग्र व फिजियोलॉजिकल चिकित्सा में नवीनतम रणनीतियों पर चर्चा की, जो भविष्य में समग्र रोगी देखभाल के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। प्रो. सिंह ने इस कार्यक्रम के महत्व पर टिप्पणी करते हुए कहा, यह कार्यक्रम पुरानी बीमारियों के इलाज और और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में इंटीग्रेटिव मेडिसिन के बढ़ते महत्व को दर्शाता है। यह आवश्यक है कि हम आधुनिक चिकित्सा को पारंपरिक प्रथाओं के साथ जोड़कर एक स्थायी स्वास्थ्य देखभाल मॉडल तैयार करें। एम्स भोपाल की फिजियोलॉजी विभाग की प्रोफेसर, डॉ. रचना पराशर ने देश के विभिन्न हिस्सों में लागू सफल इंटीग्रेटिव हेल्थकेयर मॉडल्स को प्रस्तुत किया और एम्स भोपाल के इंटीग्रेटिव मेडिसिन क्लिनिक की सफलता साझा की, जिसने जनवरी 2023 में उद्घाटन के बाद से 2,500 से अधिक रोगियों को सेवाएं प्रदान की हैं। डॉ. रागिनी श्रीवास्तव, फिजियोलॉजी विभाग की अतिरिक्त प्रोफेसर, ने पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में इंटीग्रेटिव दृष्टिकोण की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने योग प्रथाओं जैसे कुंजल क्रिया, जीवनशैली संशोधन और कटि स्नान चिकित्सा की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला, जो पीसीओएस के प्रबंधन में एक प्रभावी विकल्प प्रदान करती है। फिजियोलॉजी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रेखा जिवाने ने ' गेरियाट्रिक मरीजों में मसल्स की स्थिति और जीवनशैली में बदलाव का प्रभाव' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने सरकोपीनिया–मांसपेशियों के पतन, शक्ति में कमी और धीमी पुनर्प्राप्ति–के मुद्दों को संबोधित किया और इसके रोकथाम में व्यायाम के महत्व पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, आयुष विभाग की योग चिकित्सा अधिकारी, डॉ. मुद्दा सोफिया ने एक योग सत्र का संचालन किया। उन्होंने पुरानी बीमारियों की रोकथाम और प्रबंधन में योग को एक गैर-औषधीय हस्तक्षेप के रूप में अपनाने पर जोर दिया। इस कार्यशाला ने व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार जीवनशैली में बदलाव को प्रोत्साहित करने और योग, प्राकृतिक चिकित्सा, व्यायाम, और पोषण जैसे बहुविषयी दृष्टिकोणों को विकसित करने के महत्व पर बल दिया ताकि समग्र रोगी देखभाल प्रदान किया जा सके।

अधोसंरचना विकास के साथ उपकरणों की उपलब्धता की जाये सुनिश्चित : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

● चिकित्सा उपकरणों की खरीदी और ट्रांसफर पोर्टल की तैयारी की समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश के हर क्षेत्र में उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अधोसंरचना के विस्तार और अत्याधुनिक उपकरणों की खरीदी के प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ये सेवाएं समय पर आम नागरिकों तक पहुँचे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में प्रदेश के विभिन्न जिला चिकित्सालयों और कैंसर अस्पतालों में अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए की जा रही खरीदी प्रक्रिया की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिये कि अधोसंरचना विकास के साथ-साथ आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को प्रक्रिया की सतत मॉनीटरिंग कर समयसीमा के भीतर उपकरण खरीदी का कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने सीटी स्कैन, एमआरआई, कैथलैब, पेट-स्कैन, लाईनैक, और ब्रेकी-थेरेपी जैसे उन्नत उपकरणों की खरीदी प्रक्रिया की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश के चिकित्सकीय संस्थानों में औषधि एवं कंज्यूमेबल की उपलब्धता की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि उक्त सामग्री आवश्यकतानुसार संस्थानों में उपलब्ध हों, यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने ट्रांसफर पोर्टल की तैयारी की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यह पोर्टल सुविधाजनक और पारदर्शी व्यवस्था सुनिश्चित करेगा। उन्होंने विभागीय स्तर पर पोर्टल को और अधिक दुरुस्त करने के निर्देश दिये ताकि ट्रांसफर प्रक्रिया में किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, आयुक्त स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री तरुण राठी, एमडी एमपीपीएचएससीएल श्री मयंक अग्रवाल सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

निमाड़ के संत सियाराम बाबा पंचतत्व में विलीन

● 110 वर्ष की आयु में निधन ● मुख्यमंत्री ने संत श्री सियाराम बाबा जी के अवसान पर किया शोक व्यक्त ● लाखों श्रद्धालुओं ने नम आंखों से दी विदाई

भोपाल (नप्र)। निमाड़ के प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा पंचतत्व में विलीन हो गए। खरगोन के कसरावद के तेली भट्यान गांव में नर्मदा किनारे उनका अंतिम संस्कार किया गया। साधु-संतों ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस दौरान लाखों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने नम आंखों से उन्हें विदाई दी। सीएम डॉ. मोहन यादव भी अंतिम संस्कार में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त, निमाड़ के दिव्य संत पूज्य श्री सियाराम बाबा जी के अवसान पर शोक व्यक्त करते हुए कहा है कि यह संत समाज सहित सम्पूर्ण प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है। धर्म साधना और मां नर्मदा की सेवा में समर्पित पूज्य सियाराम बाबा ने असंख्य श्रद्धालुओं के जीवन को दिशा प्रदान की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने तथा उनके असंख्य अनुयायियों को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने बाबा सियाराम जी के निधन पर शोक व्यक्त किया

उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने बाबा सियाराम जी के ब्रम्हलीन होने पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि बाबा माँ नर्मदा की सेवा के लिए समर्पित रहे। बाबा सियाराम जी का जाना प्रदेश के लिये अपूरणीय क्षति है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि बाबा ने जीवन भर रामायण का पाठ किया और समाज को धर्म व सेवा करने की प्रेरणा दी। उप मुख्यमंत्री ने भगवान से प्रार्थना की है कि बाबा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

कटनी में 8 महीने की बच्ची जिंदा जली

मां धूप में सुला गई, भाई-बहन ने खेल-खेल में जलती तीली फेंकी; बचाने में पिता झुलसे

कटनी (नप्र)। कटनी में 8 महीने की बच्ची आग में जिंदा जल गई। मां ने मालिश करने के बाद उसे धूप में खटिया पर सुला दिया था। बड़े भाई-बहन ने खेल-खेल में माचिस की जलती तीली खटिया के पास रखे भूसे पर फेंक दी। आग भड़की और खटिया को चपेट में ले लिया। हादसा कटनी के माधवनगर थाना इलाके के झिंझरी में सोमवार सुबह हुआ। पुलिस केस दर्ज कर जांच कर रही है। बच्ची सोनिया के पिता राजू कुशवाहा ने बताया कि वह कटनी जिले के बांधा-इमलाज गांव का रहने वाला है। परिवार के भरण-पोषण के लिए उसने झिंझरी में मुन्ना गुमास्ता के तीन एकड़ खेत को अधिया पर लिया है। खेत में ही झोपड़ी बनाकर पत्नी रजनी और बच्चों समेत रहता है। सोनिया सबसे छोटी बेटी थी।आग बुझाने के कोशिश में राजू का हाथ भी झुलस गया।

खेल-खेल में बड़े भाई-बहन ने तीली जलाकर भूसे में फेंकी – राजू ने कहा, सोमवार सुबह रोज की तरह रजनी ने सोनिया की मालिश की और उसे खटिया पर लिटाकर धूप सेंकने के लिए छोड़ दिया। इसके बाद रजनी घर के काम-काज में व्यस्त हो गई। मैं खेत पर काम करने चला गया। सोनिया के पास ही 6 साल की बड़ी बहन और दो साल का भाई खेल रहे थे। खेल-खेल में उन्होंने चूल्हे के पास रखी माचिस की डिब्बी उठाई। फिर तीली जलाकर पास ही भूसे में फेंक दी। खेत में धान की कटाई के बाद बची पराली और भूसे ने तेजी से आग पकड़ी। कुछ ही मिनटों में लपटें खटिया तक पहुंच गईं। रजनी बार-बार राख के ढेर के पास बैठकर अपनी बच्ची को याद करती है।

मां बोली-क्या पता था, फिर गोद में नहीं ले पाऊंगी

राजू ने बताया कि सोनिया के रोने की आवाज सुनकर हम उसे बचाने दौड़े लेकिन आग इतनी भयानक थी कि उसे लपटों से नहीं निकाल पाए। आग बुझाने के प्रयास में राजू का हाथ भी झुलस गया। इस दर्दनाक घटना ने पूरे परिवार को सदमे में डाल दिया है।

रजनी ने रोते-रोते कहा, मालिश करने के बाद बिट्टू को खटिया पर सुलाया था। क्या पता था कि फिर गोद में नहीं ले पाऊंगी। बड़े भाई-बहन ने खेल-खेल में भूसे में आग लगा दी, जिसकी चपेट में आकर सोनिया जिंदा जल गई।

बयान के आधार पर होगी कार्रवाई

माधव नगर थाना प्रभारी अनूप सिंह ने बताया कि जानकारी मिलने के बाद मामले को संज्ञान में लिया है। परिजन के स्टेटमेंट के आधार पर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

शेर-टाइगर के केज में लगे हीटर

सांप-पक्षियों को गर्मी देने लगाए बल्ब ; ठंड बढ़ते ही बदला ग्वालियर 'जू' का मैन्यू

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर चंबल अंचल में उत्तर भारत से आने वाली सर्द हवाओं ने ठंड का अहसास कराना अब शुरू कर दिया है। यही वजह है कि ग्वालियर चिड़ियाघर में रहने वाले पशु-पक्षी, जानवरों के रहन सहन व खान-पान में भी बदलाव हो गया है। ग्वालियर के गांधी प्राणी उद्यान (जू) में टाइगर, शेर के केज में गर्माहट देने के लिए हीटर लगा दिए गए हैं। सुबह-शाम यह टाइगर और शेर हीटर और दिन में धूप से ताप लेते नजर आते हैं। वही सांपों के केज में बल्ब लगाकर हीट दी जा ही हैं। अन्य जानवरों के पिंजरों को घास से कवर किया गया हैं। साथ ही चिड़ियाघर में सर्दी की दस्तक से मैन्यू भी बदल गया हैं। अब जनवरों को गर्मी देने वाली सब्जियां व खाना दिया जा रहा हैं।

टाइगर के पिंजरा में हीटर लगाए – हाल ही में उत्तर भारत में पहाड़ों पर बर्फबारी का असर मैदानी इलाकों में दिखने लगा हैं। ग्वालियर के फूलबाग स्थित गांधी प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) में ऐसे जानवर जो खुले में रहते हैं, जैसे हिरण, नील गाय आदि उनके बाड़े में सूखी घास डलवा दी गई है, जिससे सतह गर्म रहे। आने वाले दिनों में सर्दी तेज होते ही शाम के वक्त अलाव की व्यवस्था भी की जाएगी। वहीं शेर और टाइगर के पिंजरों में हीटर लगा दिए गए हैं। पक्षियों के केज को ठंडी हवा से बचाने लिए पर्चे लगा दिए गए हैं। सांप के सेल में बल्ब जलाकर हीट की व्यवस्था की जा रही हैं।

- **जानवरों को गर्म सब्जियां दी जा रही** – सभी जानवरों को इस मौसम में मैथी, हरा लहसुन, गुड़ और बरसीम खाने के लिए दिया जा रहा हैं। इसके साथ ही उन्हें भोजन में मौसमी सब्जियां और फ्रूट्स भी खिलाए जा रहे हैं। बंदरों को भुने हुए चने दिए जा रहे हैं। अभी गर्माहट देने वाली सब्जी, भाजी जानवरों को खिलाई जा रही हैं। जो शरीर को ठंडक प्रदान करने वाला खान पान है, उसे बंद कर दिया गया हैं।
- **शेर के पिंजरा में तापमान बनाकर रखा** – शेर को गर्माहट देने के लिए 4 से 5 हीटर लगाए गए हैं। साथ ही उन्हें अब पूरे हफ्ते भोजन में मांस दिया जा रहा है। नाग के केज में सूखी घास और 200 वाट के बल्ब लगा दिए गए हैं, जिससे उन्हें सर्दी में गर्माहट मिल सके।

जबलपुर के दंपति को 96 घंटे डिजिटल अरेस्ट रखा

80 सवाल किए, यह तक पूछते थे- आज खाने में क्या बना रहे, 10 लाख ऐंठे

जबलपुर (नप्र)। डिजिटल अरेस्ट के मामलों पर रोक नहीं लग रही है। जबलपुर में पति - पत्नी को 96 घंटे डिजिटल अरेस्ट रखा गया। साइबर क्रिमिनल पूरे चार दिन तक लगातार उन्हें वॉट्सऐप वॉइस कॉल पर लिए रहे।

हर 24 घंटे में 4 अधिकारी (फर्जी) बदल-बदलकर पूछताछ करते थे। उनकी पल-पल की एक्टिविटी की जानकारी लेते थे। यह तक पूछते थे कि आज क्या बना रहे हो? दंपती से इन 4 दिनों में 80 सवाल अलग से मैसेज कर पूछे गए, इनके जवाब कागज पर लिखवाए। हर दिन बदमाश 20 सवाल पूछते थे। बदमाशों ने पत्नी की गिरफ्तारी का डर दिखाया। पति - पत्नी इस कदर घबरा गए कि उन्होंने पहले 1.75 लाख रुपए, इसके बाद 10 लाख रुपए और ट्रांसफर कर दिए। बाद में बदमाशों ने 20 लाख रुपए की डिमांड और कर दी। इस पर पति - पत्नी ने कहा कि अब और रुपए नहीं दे सकते, इससे अच्छा है कि हम सुसाइड कर लें।

फ्रॉड का यह सिलसिला 1 दिसंबर की सुबह 8.10 बजे से शुरू होकर 5 दिसंबर की सुबह 8 बजे के बाद खत्म हुआ। दंपती ने दुबई में रह रहे बेटे को इसकी जानकारी दी। 6 दिसंबर को बेटा जबलपुर आया, इसके बाद 8 दिसंबर को पुलिस से शिकायत की गई। 9 दिसंबर को भी दंपती को धमकी भरा कॉल आया। रविवार, 1 दिसंबर। शहर की संजय नगर कॉलोनी में रहने वाले सेंट्रल गवर्नेंट से रिटायर्ड एंथोनी

प्रकाश, पत्नी एग्नेस नीना पॉल के साथ चर्च से घर लौटे। नाश्ता करने की तैयारी कर रहे थे, तभी नीना के मोबाइल की रिंग बजी। इस समय सुबह के 8.10 बज रहे थे।

एंथोनी के मुताबिक, 68721802766 नंबर से वॉट्सऐप कॉल था। पत्नी के कॉल उठाते ही सामने वाले ने कहा- मैं दिल्ली क्राइम ब्रांच से बोल रहा हूं। आपने मनी लॉन्ड्रिंग की है। आपके खिलाफ वारंट है, जल्द दिल्ली पुलिस आपकी गिरफ्तारी के लिए जबलपुर पहुंच रही है। इतना सुनते ही पत्नी घबरा गईं, मैंने उन्हें इस हालत में देखकर पूछा कि क्या हुआ? फोन करने वाला बोला- आपकी पत्नी पर एफआईआर हुई है। उन्होंने मोबाइल पर 0 नंबर दबाने के लिए कहा और पत्नी का मोबाइल हैक कर लिया।

एंथोनी बताते हैं, हमने वजह पूछी, तो फर्जी अधिकारी बोला- नीना के नाम का दिल्ली एचडीएफसी बैंक में खाता खुला हुआ है। नकली सिम भी बनी हुई है। मैंने उनसे कहा कि ऐसा नहीं हो सकता है।

आपको क्यों नहीं लगा कि यह ठग हो सकते हैं, इसके जवाब में एंथोनी ने कहा- एंथोनी के मुताबिक, वारंट में लिखा हुआ था कि अशोक गुप्ता नाम के शख्स के साथ आपका बैंक खाता खोला गया है। इसी के जरिए मनी लॉन्ड्रिंग की गई है। आपके खाते को सीबीआई ने चेक करते हुए बताया है कि आरबीआई गाइडलाइन के मुताबिक ये इलीगल खाता है और इससे ब्लैक मनी ट्रांसफर होती है।

बोले- मोबाइल बंद, तो आएगी पुलिस – नीना और उनके पति ने बताया, बदमाश जैसा कहते गए, हम करते गए। हमसे तरह-तरह के सवाल किए, जैसे- घर पर और कौन-कौन है, बेटा-बेटी हैं, तो क्या करते हैं, क्या खाना बना रहे हो? वे पल-पल की जानकारी ले रहे थे। 24 घंटे में चार बार फर्जी पुलिस अधिकारी बदल रहे थे। कभी मिस्टर यादव बात करते, तो कभी मिस सीमा वर्मा...। हमें निर्देश थे कि कॉल चालू रखना है, बैटरी खत्म हो, तो फौरन चार्ज पर लगाना है। मोबाइल बंद हुआ, तो पुलिस आएगी।

राजगढ़ एसपी ने सड़क पर घायल बुजुर्ग को दिया सीपीआर

कलेक्टर के साथ सारंगपुर जाते समय वाहन रूकवाकर की मदद; अस्पताल में हुई मौत

राजगढ़ (भोपाल) (नप्र)। मंगलवार शाम को ब्यावरा से सारंगपुर जा रहे राजगढ़ एसपी आदित्य मिश्रा ने एक बुजुर्ग की जान बचाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी। उन्होंने बुजुर्ग को सड़क पर घायल पड़ा देख बिना देरी किए अपनी गाड़ी रुकवाकर घायल को सीपीआर देने का प्रयास किया। तमाम कोशिशों के बावजूद घायल बुजुर्ग की जान नहीं बचाई जा सकी। इस घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

यह था मामला – मंगलवार शाम को राजगढ़ जिले के कलेक्टर गिरीश कुमार मिश्रा और एसपी आदित्य मिश्रा ब्यावरा से सारंगपुर जा रहे थे। इस दौरान करनवास के पास सड़क पर उन्हें घायल अवस्था में एक बुजुर्ग व्यक्ति दिखा। यह देख एसपी-कलेक्टर ने तुरंत अपनी गाड़ी रुकवाई और बिना देरी किए सड़क पर उतरकर घायल बुजुर्ग की मदद करने की कोशिश की। स्थानीय लोगों ने बताया कि हाईवे पर पड़े हीरालाल सितार (70) निवासी किशनपुरिया को एक कार ने टक्कर मार दी थी। टक्कर मारने के बाद कार का चालक फरार हो गया और हीरालाल अचेत अवस्था में पड़े थे।

- **सीपीआर देते हुए एसपी बोले**– काका उठों – इसके बाद एसपी आदित्य मिश्रा ने घायल को बचाने के लिए सीपीआर देने की कोशिश की। उन्होंने मुंह से सांस देकर उनकी जान बचाने का प्रयास किया और बुजुर्ग को होश में लाने के लिए काका कहकर आवाज दी। इस दौरान कलेक्टर गिरिश कुमार मिश्रा भी उनके पास मदद के लिए खड़े रहे। इसके बाद मौके पर पहुंची एम्बुलेंस से बुजुर्ग को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।
- **वायरल हो रहा वीडियो** – मौके पर मौजूद लोगों ने अफसरों का बुजुर्ग की मदद करने की घटना का वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पुलिस टक्कर मारने वाले कार चालक की तलाश कर रही है।

गुजरात आईपीएस ट्रांसफर,लेडी सिंघम श्वेता श्रीमाली का तबादला

अहमदाबाद। 2010 बैच की आईपीएस अधिकारी श्वेता श्रीमाली को गुजरात सरकार ने केंद्र की प्रतिनियुक्ति के लिए रिलीव कर दिया है। अभी तक अहमदाबाद की साबरमती जेल की अधीक्षक रही श्वेता श्रीमाली इंटेलीजेंस ब्यूरो में डिप्टी डायरेक्टर बनाया गया है। श्रीमाली अभी तक गुजरात की सबसे ज्यादा संवेदनशील जेल की कमान संभाल रही थीं। अहमदाबाद की साबरमती जेल में ही गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई को रखा गया है। गुजरात सरकार ने श्वेता श्रीमाली जगह पर 2020 बैच की आईपीएस अधिकारी डॉ. निधि ठाकुर को जेल अधीक्षक बनाया है। ठाकुर अभी तक वडोदरा मध्यस्थ जेल की अधीक्षक थीं। गुजरात सरकार ने 9 दिसंबर को एक आदेश में 25 आईपीएस के तबादले किए थे।

फिर से महिला ऑफिसर को दी कमान

राजस्थान की रहने वाले श्वेता श्रीमाली को सरकार ने मई, 2024 में साबरमती जेल की कमान सौंपी थी। वह बतौर डीआईजी साबरमती जेल को देखरेख कर रही थीं। श्वेता श्रीमाली गुजरात के डांग जिले की एसपी रहने के दौरान सुर्खियों में आई थी। तब इन्हें लेडी सिंघम कहा गया था। गुजरात की साबरमती जेल में लॉरेंस बिश्नोई से पहले यूपी के डॉन अतीक अहमद को रखा गया था। श्वेता श्रीमाली के पति सुनील जोशी भी आईपीएस हैं। वे अभी गुजरात एटीएस में डीआईजी हैं। गुजरात सरकार ने अब एक बार फिर से इस जेल की कमान महिला ऑफिसर को सौंपी है।

चिकित्सकों के रिक्त पद भरने जल्द आएंगे विज्ञापन

स्वास्थ्य विभाग में संविदा पर काम कर चुके डॉक्टर्स को सीधी भर्ती में मिलेगा 50 प्रतिशत आरक्षण

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में सीधी भर्ती से पदों को भरने की प्रक्रिया के तहत, लोक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग ने संविदा पर प्रदेश के विभिन्न जिलों में कार्यरत चिकित्सकों को अनुभव प्रमाण पत्र जारी करने का निर्णय लिया है।

यह प्रमाण पत्र इसलिए जारी किए जाएंगे ताकि पीएससी (लोक सेवा आयोग) के माध्यम से होने वाली सीधी भर्ती में संविदा पर काम करने वाले चिकित्सकों को उनके अनुभव का लाभ मिल सके और रिक्त पदों में से 50 प्रतिशत पदों पर आरक्षण दिया जा सके।

लोक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग ने संविदा पर नियुक्त डॉक्टर्स को सीधी भर्ती में नियमित पदों पर आवेदन करने के लिए अनुभव प्रमाण पत्र जारी करने का फैसला किया है।

इसके विभाग के आयुक्त ने सभी विभागाध्यक्षों, मिशन संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और संचालक राज्य बीमा सेवाएं इंदौर को निर्देश जारी किए हैं। इसमें कहा गया है कि पीएससी के माध्यम से की जाने वाली विशेषज्ञ और चिकित्सा अधिकारियों की भर्ती में नियमित पदों पर आवेदन बुलाए जा रहे हैं।

आने वाले दिनों में इसके विज्ञापन जारी होंगे। इसलिए संविदा पर नियुक्त चिकित्सकों को 50 प्रतिशत आरक्षण का लाभ दिलाने के लिए संविदा सेवा अनुभव प्रमाण पत्र जारी किए जाएंगे। इसके आधार पर ही एमपी पीएससी द्वारा संविदा के लिए 50 प्रतिशत आरक्षित सीटें तय की जाएंगी।

कौन करेगा अनुभव प्रमाण पत्र जारी?

- **लोक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग:** सभी विभागाध्यक्ष अपने अधीन कार्यालयों में कार्यरत या कार्य कर चुके संविदा चिकित्सकों और पीजी चिकित्सकों के लिए प्रमाण पत्र जारी करेंगे।
- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम):** मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा राज्य और जिला स्तर पर जिला स्वास्थ्य समितियों द्वारा नियुक्त चिकित्सकों के लिए प्रमाण पत्र जारी किए जाएंगे।
- **गैस राहत और पुनर्वास विभाग:** संचालक द्वारा परीक्षण के बाद अनुभव प्रमाण पत्र जारी किए जाएंगे।
- **जेल विभाग और गृह विभाग:** जेल महानिदेशक और पुलिस महानिरीक्षक द्वारा नामित अधिकारी यह प्रमाण पत्र जारी करेंगे।
- **संचालक, राज्य बीमा सेवाएं, इंदौर:** श्रम विभाग के अधीन कार्यरत संस्थाओं में कार्यरत चिकित्सकों का अनुभव प्रमाण पत्र जारी होगा।
- **मेडिकल कॉलेज:** चिकित्सा शिक्षा निदेशक संबंधित कॉलेज के डीन के प्रकरण पर अनुभव प्रमाण पत्र जारी करेंगे।

संविदा भर्ती से जुड़े नियम

- राज्य शासन द्वारा 22 जुलाई 2023 को जारी नियमों के अनुसार, संविदा पद पर कम से कम 5 वर्षों तक सेवा देने वाले संविदा अधिकारी/कर्मचारी, सीधी भर्ती के रिक्त पदों में 50 प्रतिशत आरक्षण के पात्र होंगे।
- यह आरक्षण केवल एक बार प्रदान किया जाएगा।
- संविदा कर्मचारी को समान पद पर 5 वर्ष तक लगातार कार्य करना अनिवार्य होगा।
- अगर किसी संविदा अधिकारी ने अलग-अलग पदों पर काम किया है, तो 5 वर्षों की अवधि की गणना सभी पदों पर काम करने के समय को मिलाकर की जाएगी। यदि किसी अवधि में संविदा से हटाया गया हो, तो उस अवधि को घटाकर गणना की जाएगी।
- ये अनुभव प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को पारदर्शी और सुगम बनाने के लिए विभाग ने अलग-अलग फार्मेट भी जारी किए हैं, जिनके आधार पर आवेदन लिए जाएंगे और प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।